देवीपैज ।

जिसे

मोहनसराय डांकखाने रोहाना जि० बनारस निवासी
कविवर लाला मुकुन्दीलाल ने भक्त जनों के चित्त
बिनोदार्थ लिखा और जिसे उन्हीं कविजी ने
निजव्यय से छापकर प्रकाश किया ।

॥ काशी ॥

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुई ।

सम्बत १९६२

प्रथमवार १०००] [मूल्य ।)
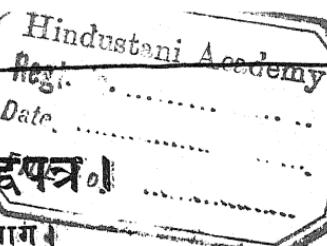
शुद्धाशुद्धपत्र ।

प्रथमभाग ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	६	प्रदिवमतो	प्रदोमवतो
२	२०	जुरै	नुरै
३	८	सुरस्वामिनि	सुरस्वामिनी
४	१२	समरि	समोर
४	१८	सरुप	सरूप
५	१०	धारिकी	धारिकै
७	१९	बम्न	बन्ध
८	१०	धार	धारै
८	१२	दुरे	दुरै
१०	५	भूभै	भूमै
१०	१३	होत	हति
१०	१७	बभन	बमन
११	४	सिंह	सिंह
१४	९	वह्नि	वहि
१६	८	हिभ्मत	हिम्मत
१६	१९	त्रिदवम्रो	त्रिदवेश
१८	१७	अयुधै	आयुधै
१८	१९	कित	किते
१९	१३	मये	भये
२२	१४	के	कै
३२	१२	हुऐ	हुए
३५	१९	एश्वय्य	ऐश्वर्य्य

शुद्धाशुद्धपत्र ।

दूसरे भाग का ।

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	८	देवनिद्वन्द	देव निर्द्वन्द
२	१७	बहुकाल कारन	बहु कालका रण
३	९	सिंहासनसीन	सिंहासनासीन
३	१९	यह	पहँ
४	४	अहकार	अहंकार
४	७	सुरारी	सुरापी
४	१४	वृन्द	कुन्द
४	२०	अन्तिनी	अनन्तिनी
५	२०	अनुभव	अनुभाव
६	४	दैदीप्त	देदीप्त
६	१०	आतमश्या	अतिश्याम
९	२१	इन्तजा	इन्तजामीं
१०	१०	कामनी	कामिनी
११	३	तौ रन चढ़िलोहलेहु	रन चढ़ि लोहालेहु
११	९	केहि	कहि
१२	१८	गभार्यं	गर्वाय
१३	१३	से	ते
१४	१४	अघमारे	अधमारे
१५	९	देव नरनी	देव घरनी
२२	२१	धूम	धूम्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३	१०	समज	समाज
२४	९	तैं	ते
२४	११	मौज	मौजं
२७	१३	समरभिलाखे	समराभिलाखे
२८	३	शकति	शक्ति
२८	६	सन्दर	सुन्दर
२८	८	शकति	शक्ति
२८	११	शकति	शक्ति
२८	१३	शकति	शक्ति
२९	११	सेहथो	सेहथो
३०	४	सैन	सेन
३२	६	शकति	शक्ति
३२	१५	त्यागा	त्यागो
३२	१८	जात	जातना
३३	१३	नहो	कहुं
३४	३		रन
३५	४	भी	भा
३५	१३		शक्ति
३५	१९	घन्यवाद	धन्यवाद
३६	४	भगो	भयो
३६	७	क्रोधाघेश	क्रोधावेश
३६	९	सुन्नत	सूचत
३६	११	पैदल	पैदल
३६	१३	घाये	धाये

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३७	४	सन्दरि	सुन्दरि
३९	१७	मिदनी	मेदिनी
४१	७	तारि	उतारि
४२	११	जा	जो
४४	१९	कार	करि
४५	१०	समरि	समीर
४७	१२	भाति	भीत
५०	२०	सिद्धि	सिद्धो
५१	१७	अग्र	अंग्र
५१	१८	प्राणिया	प्रानियों
५१	१९	जग	जुग
५४	१७	दानव	दानवा

दूसरे भाग के ३४ पृष्ट में जो शुभगदंडक और छप्पय के चार पद छप गये हैं वह ३१ वें पृष्ट के आरम्भ में पढ़ना चाहिये जिसमें छप्पय के छयो पद ठीक बैठ जावैं।

श्रीगणेशाय नमः।

श्रीजगन्मात्रे नमः।

अथ मुकुन्दीलालकृत।

श्रीदेवीपैज।

प्रथम भाग।

(घनाक्षरी)

सिद्ध मुद मङ्गल प्रसिद्ध बुद्धि विद्याप्रद, सेवक सुखदबर विरद सम्हारिये। देव अग्रनीय पूजिनीय माननीय जग, जांचक-निवेदन कृपाल उर धारिये। परम सुजान ज्ञानसागर मुकुन्दलाल, करुनानिधान बान आपन बिचारिये। मन अभिलाषा भाषा देवीपैज करिबे की, येहो गनराज विघ्न संकट निवारिये॥ १॥

ब्यंगधुनि शब्द अर्थ वाक्यचातुरी बिलास, नौरस प्रभेद भाव छन्दन की खानी है। भूषन सरूप तुक योजना प्रबन्ध शक्ति, बस्तु गुन हेतु युक्ति लच्छना प्रधानी है। मङ्गलकरनि अबिबेकता हरनिहारी, विद्याबुद्धिदानी निगमागम बखानी है। महिमा अपार पार पावै को मुकुन्दलाल, कबिन अधार महारानी एक बानी है॥ २॥

सुजस बढ़ावनी पढ़ावनी सुकाव्यकला, जगत बिशेष हित लाभ पहुँचावनी। धरम-जतावनी बतावनी सुनीति-मग, प्रीति रीति पावनी उछाह दरसावनी। परम सुहावनी गहावनी गँभीर

गुन कविमन भावनी बिबेक उपजावनी । ज्ञान समुझावनी रिझावनी मुकुन्दलाल बानी कबिकंठ-नवरस-बरसावनी ॥ ३ ॥

जैति महामङ्गला महेश्वरी कला प्रचंड, दुर्गे जगदम्ब देवि परम प्रकासिनी । चंड मुंड ताम्रधूम्रलोचन निसुम्भ सुम्भ, रक्तबीज दुष्ट महिषासुर बिनासिनी ! स्वबस विलासिनी प्रभासिनी प्रदीवमती, सिंह पीठ आसिनी चराचर-निवासिनी । ध्यावत रमेश बिधि शंकर मुकुन्दलाल, कृपा कोर चाहत कृपाकटाक्षरासिनी ॥

दोहा ।

बिष्णु बिधाता कामरिपु, द्विज गुरु पद शिर नाय।
दैत्यदलनि देवीकथा, कहौं यथामति गाय ॥५॥

सोरठा ।

सिन्धु चरित लहि बुन्द, दुर्गा कृपा कटाक्षते ।
लघु कबि लाल मुकुन्द, बरनत पैज प्रतापबर ॥

मत्तगयन्द ।

पूर्ब समै महिषासुर भो जग तेज प्रताप महाबल भारी ।
दानवसेन अपार चमूपति चिक्षुर आदि बड़े धनुधारी ॥
जीति दशो दिगपाल दिनेशहिं देश नरेश सबै अधिकारी ।
छीनिलियो लड़ि इन्द्रको आसन शासन आपु करै कुबिचारी ॥

दोहा ।

अमर समर करि हारि सब, जुरै मेरु-गिरिखोह ।
बिधिहरिहरमिलिसोंचिमन, केहिबिधिलीजैलोह ॥

गीताछन्द।

जग पुरुष मात्र अवध्य अस बर मागि भयउ अजीत।
ताते मदोन्नत समर निर्भय करत अमित अनीत॥
पदहीन धन बलहीन सुर सब फिरत दीन अनाथ।
अब होत निश्चय अवसि वह शठ मरिहिं प्रमदा हाथ॥ ८॥

सोरठा।

यह सम्मत ठहराय, ध्यायो भगवति निर्गुना।
कीजै प्रगटि सहाय, देहु सरन सुरस्वामिनि॥

छप्पय।

अतुल जोग माया प्रताप बल देव बखाने!
आदि शक्ति धरि ध्यान ज्ञान करि अस्तुति ठाने॥
जय आद्या जय त्रिगुन रूप जन-काजसवाँरिनि।
अखिल सृष्टि कारन प्रभाव पालन संहारिनि॥
जय जय जगदम्ब अलम्ब सुर, अब बिलम्ब जानि लावहू।
आयुध सुधारि चढ़ि केशरी, दनुज निधन श्रुकि धावहू॥

घनाक्षरी।

तुहीं आदि शक्ति ब्रह्म शक्ति ह्वै रचति सृष्टि, विष्णु शक्ति पालती महेश शक्ति नाशती। दिग्गज वराह कूर्म शेष शक्ति धारि धरा, चन्दकला शक्ति सूर्य्य शक्ति ह्वै प्रकाशती॥ इन्द्रशक्ति भोगती ऐश्वर्यंती कुबेरशक्ति, बाहित समीर शक्ति पावक प्रभाशती। मेघशक्ति वर्षि बारि रक्षती कृषी मुकुन्द, शूल शेल शक्ति लै सुरारिवृन्द त्राशती॥

तुहीं रिद्धि सिद्धि बुद्धि सुखमा समृद्ध निधि, तुहीं स्वाहा स्वधा दाया माया जगनन्दनी । तुहीं परमेश्वरी महेश्वरी कला अनन्त, आदि अंत लीला भेद रहित स्वछन्दनी । त्रिगुना सरूप महाविद्या छांह धूप तुहीं, प्रकृति अनूप रूप प्रभा तुहीं चन्दनी । अर्थ धर्म काम मोक्ष सिद्धिदा तुहीं मुकुन्द, देवन अनन्दनी अदेवन निकन्दनी ॥

दोहा ।

करत प्रार्थना ओजगुन, प्रादुर्भाव प्रकाश ।
कढ़्यो तेज मुख सुरन के, बाढ़ी लवरि अकाश ॥

घनाक्षरी ।

विष्णु तेज प्रथम विरंचि तेज मिल्यो जाय, शंकर को महातेज दिव्य जोति मैं जग्यो । बरुन कुबेर इन्द्र पावक समरितेज, धर्म चन्द्र मारतंड चंड तेज सो लग्यो । चारन गन्धर्ब जच्छ किन्नर मुनीन्द्र सिद्ध, बसु भौम बुद्ध जीव आदि तेज दै पग्यो । सुर समुदाय कोटि तैंतिस मुकुन्दलाल, तेज जुरि एक दिव्य अंगना जगामग्यो ॥ १५ ॥

दोहा।

देखि प्रदीप्त सरुप वर, परम ज्योति अनकूल ।
हरषित बरष्यो देवगन, कल्पद्रुम के फूल ॥

झूलना ।

कोटि शत तड़ित तन दिव्य भूषन बसन, धीर गम्भीर प्रन

गरजि बोली । डगमगे कोल कच्छप हले नागपति, हल चले दिग्गजन भूमि डोली ॥ सुनहु गिर्वानगन होहु अब निडरमन, घेरि दल दनुज रन गर्ब गारौं । महिष असुरेश धरि दुष्ट महि पटकि करि, मर्दि गर्दैं मिझ्झरि मारि डारौं ॥ १७ ॥

दोहा ।

सुनतबिबुधगनपुलकितन,नाइकमलपदमाथ।
निजनिजआयुधप्रगटितब, दियेभगवतीहाथ॥

घनाक्षरी ।

तोमर त्रिशूल चक्र मूशल प्रचंड दंड, बज्र कुन्त खड्ग शक्ति बान धनु धारिके । परिघ पास पास पटा शांगी गदा शैल, दिब्य मंत्र अस्त्र शस्त्र बिबिध सम्हारिकै । कटि तट दुहूं ओर झूलत बिशाल त्रोन, अगरि कवच टोप अंगनि संवारिकै । अष्टदश भुजा महालक्ष्मी मुकुन्दलाल परम उछाह काज देवन बिचारिकै ॥ १६ ॥

छप्पय ।

बहुरि कीन्ह उत्पन्न अमित गन नाना जाती ।
भूत पिशाच बिताल प्रेत जोगिनि बहु भांती ॥
समर भयंकर बेष हाथ शस्त्रास्त्र बिराजैं ।
गरजत घोर कठोर प्रलय के बादर लाजैं ॥
चढ़ि बाहन सिंह सरोष मुख, महिषासुरदलदलन को ।
साजि कटक कटीली अम्बिका, चली प्रचारत खलन को २१ ॥

दोहा ।

जैजैधुनिकरिअमरगनचढ़िचढ़िबिबिधबिमान् ।
चलेदेखिवेचरितरन,हरषितहनतनिशान ॥२१॥

छप्पय ।

डोलति बसुधा दूमि दूमि गिरि शृङ्ग खरकत ।
मसकत सीस अहीस कमठ दबि पीठ दरकत ॥
दिगदन्ती चिक्करत कोल पग डगमग डोलैं ।
कम्पित तीनहु लोक देव जय देवी बोलैं ॥
खरभरे सिन्धु सातो उछलि, भूमि झुकी अति भार तें ।
कहि कबि मुकुन्द जगजननि जब, चढ़ी समरें हुंकारतें ॥ २३

दोहा ।

पहुँचि बेगि महिषेश पुर, घेरि लीन्ह चहुँओर ।
हंकारत झोटङ्ग गन, होत सोर घन घोर ॥२४॥

घनाक्षरी ।

औचक चढ़ाई देखि दैतन आचर्ज मानि, जाइ माहिषासुर जमायो सब बात है । नाथ सुरनाथ न तो बरुन कुबेर जम, किन्नर न गन्ध्रब न चारन देखात है । मारतंड प्रभा है कि अनल प्रले की जोति, दामिनीछटा की धौं कलाप छहरात है । सिंह पै चढ़ी है देखि आंखि चकचौन्ध होत, संग में असंख्य गन जोगिनी जमात है ॥ २५ ॥

गीता छन्द ।

सुन्दर बिचित्र अपूर्व ललना, अतुल अद्भुत रूप ।
अरु तीन नेत्र दशाष्ट भुज, आयुध अनेक अनूप ॥
भूषन बसन तन दिव्य सोहत, दीप्त क्रीट प्रभाल ।
बस लखति जानी जाति वह दुति, दमक तेज बिशाल ॥२६॥

दोहा ।

सुनिबोल्योकरकसबचन, महिषासुरअतिक्रोधि ।
यहदेवनकरतूतिहै, कियेसहायकसोधि ॥ २७ ॥

सवैया ।

सन्मुख लोह न लीन्हि कबौं, नत जुद्ध जुरे सुर भागत बांचे ।
बन्दि परे अजहूं कितने, छुटि दंड दिये बनि सेवक सांचे ॥
आयसु मागि प्रबन्ध करैं, रुख देखि सदा मम काज सवांचे ।
पाछिल बैर बिचारि हिये, पुनि जानि परै छल साधन राचे ॥२८

दोहा ।

सुरन जीति लहगर भयो, दनुज राज बलवान ।
कहेसिसाजिदलचढ़हुभट, करहुँसमरघमसान ॥

घनाक्षरी ।

नाय नाय भाल भट कोटिन कराल उठे, पहिरि सनाहको उछाह भरे बमकैं । बाहैं बांहु बन्ध उर लोहन के तावा धरे, ऐठैं शिर पेंच जो जँजीरे दार चमकैं । कवच अभेद तन त्रान

कटि बान्है त्रोन, लडिवे की ठाट ठटि जहां तहां तमकैं । पौरुष समर्थ्य बल बिक्रम प्रताप कहि, आयुध उबाहि चाहि मनै मन रमकैं ॥ ३० ॥

दोहा ।

सहज तामसी दैत्यगन, समर बदैं नाहि आन ।
करत कोलाहल पुलकितन, चलकत भरे गुमान ॥

घनाक्षरी ।

गाजै लागे बीर रथ हाथी घोड़े साजै लागे, बाजै लागे मारू राग सूरत उमंग मैं। भावैं लागे, भट करखैत जस गावै लागे, धावै लागे झुंड झुंड वीर रस रंग मैं ॥ धार लागे बिरद सुधारै लागे सेन ब्यूह, मारै लागे गाल एक एकन के संग मैं । मुरै लागे कादर बहाना कै कै दुरे लागे, जुरै लागे सुभट डफूरै लागे जंग मैं ॥

दोहा ।

सेनापति चिक्षुर भयो, धीर बीर बल बंक ।
साजिबिबिधाबिधिबाहनी, गरजतचलानिसंक॥

घनाक्षरी ।

बारिद से महाकाय बड़े बड़े सूरबीर, चढ़े बढ़े रत्थ पैनै अस्त्र शस्त्र सज्जि कै। मद मतवारे मारे झूमत दतारे गज, शैलाकार जोधे बैठ ऐंठे गलगज्जि कै ॥ अगिनित घोड़े कुछालते उड़ान देते, ठनकत जाते असवार लीन्हे रज्जि कै । पैदल लड़ाके रन-बांके चलै हांकी हांका, मन उमगावत जुझाऊ बाद्य बज्जि कै ॥३४॥

सोरठा।

चरचरात रथ चक्र, हनहनात बाजी बिपुल।
चिघरत गज स्वर बक्र, शब्द भेदि गुंजत गगन

घनाक्षरी।

चामर चँवर जान बिविध बिमान सजे, जापै भांति भांति के पताके फहरत हैं। तुरही तमूरे ढोल दुन्दुभी की धूम धाम, घंटे घननात घने धौंसे वहरत हैं॥ उठी धूर भूरि नभ मंडल लौं रही पूरि, धरा धसकति शेष शीश थहरत हैं। धावा देत जात चढ़े मानों घन घोर घटा, देखि दनुजेश दल देव हहरत हैं॥३६॥

दोहा।

होतअमितअसगुनअसुभ नहिमानतशठएक।
हहकारतसंग्राममाहि, निर्भयरहित विवेक॥३७॥

करखा।

देखि दल दैत कमनैत बानैत बहु जैति कहि देवि भट झपटि धाये। गरजि बरजोर अभिलाष नहि थोर निज जोर सों होड़ बदि रन मचाये॥ लरत दुहुं ओर धरु मारु कर सोर अति, तीछन कठोर गहि अत्र घालैं। दपटि धाव धरैं पटकि भूतल दरैं, समर क्रीड़ा करैं मारि डालैं॥ ३८॥

भुजंगप्रयात।

इतै जोगिनी हैं उतै दैत जोधा। भिरैं पंज कै कै परस्पै

सक्रोधा । चलैं शक्ति शूलैं कृपानैं प्रचंडैं । कटैं रुंड मुंडै परैं भूमि खडैं ॥ ३९ ॥ लडैं शाकिनी डाकिनी डांकि मारैं । उखारैं भुजा पेट फारैं पछारैं । उडैं भूतनी प्रेतनी हांक देती । छुटैं बान सो बीचहीं लोकि लेती ॥ ४० ॥ धरैं कूदि कै केश आकाश धावैं । फिरावैं झका झोरि भू मैं गिरावैं । किते मर्दि गर्दैं मिलै मींजि डारैं । किते कोपि ज्वालामुखी ह्वै प्रजारैं ॥ ४१ ॥

गीताछन्द ।

उमगत लरत उत असुर भट इत कौतुकी गनबीर ।
संग्राम-मदमाते परस्पर करत शब्द गम्हीर ॥
करि रौद्र रूप बिशालनैनी देवि सिंह कुदाय ॥
गरजत चली आयुध प्रहारत हनत रिपु समुदाय ॥ ४२ ॥

छप्पय ।

कितनन को होत खर्ग स्वर्ग पठये छिन माहीं ।
कितनन पाश फसाय भूतगन धरि धरि खाहीं ॥
चक्र त्रिशूल पवारि मारि कितनन बध कीन्हा ।
गदा चोट मुख फोरि तोरि भुज केतिक दीन्हा ॥
उर लगत शक्ति मुर्छित किते, रुधिर बमन कितने करैं ।
चित ह्वैं अचेत महि कितिक भट, बेधित शर कहँरत परैं ॥

दोहा ।

कटत मुंड जुग खंड तन, परत भूमि भहराय ।
करि पखंड उठि उठि भिरत, केतिक भट समुहाय ॥

घनाक्षरी।

जैसे भानुप्रभा तमतोम को बिनाश करै, पच्छिन झपटि जैसे बाज हनै छोपि कै। तृन-समुदाय पाय जारत कृशानु जिमि, मृगन बिड़ारै जैसे सिंह, मन चोपि कै। प्रखर प्रबात जिमि बारिद प्रलोप करै, पन्नग पछारै खगराज जिमि कोपि कै। सुरन सहाय तिमि अम्बिका मुकुन्दलाल, दैत्यबलबाहनी निपातै प्रण रोपि कै॥ ४५॥

झूलना।

देवि गन सूरतर समर समरत्थ बर, रथन पै रत्थ धरि तोरि डारैं। काटि असि पुच्छ पद, चोंथि कै सुण्ड रद, कुन्त फरगांसि गज पेट फारैं॥ भञ्जि बाहन घनै, अश्व खच्चर हनै, तुच्छ बैरिन गनै डांटि मारैं। बीर चिल्हकत परैं बहुरि उठि उठि लरैं देखि कादर डरैं हहरि हारैं॥ ४६॥

॥ दोहा॥

सिमिटि रुधिर सरिता बहत, मज्जत भूत पिशाच।
साकिन्यादिक गावती, करति जोगिनी नाच॥

घनाच्चरी।

गिद्ध खग काक कङ्क लास पै झपट्टा दै दै, लै लै मास चोंच सों अकाश मड़रात हैं। एक उड़ि आवत बिलोकि उड़ि जात एक, ऐसो तामें छोरि एक एकन को खात हैं॥ बिचरत

स्वान वृक जम्बुक समूह जूह, लोथिन को काटि खात भूँकत हु-
हात हैं। शीश बिनु डोलत कबन्ध रन जहां तहां घायल करा-
हत बिवस बिलखात हैं ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥

छिन्न भिन्न दल देखि निज, चिक्षुर दुष्ट रिसान।
सावधान करि दनुजगन, गरज्यो तड़ित समान॥

घनाक्षरी।

बोला अभिमानी बीर बीरता नशानी आज, छाड़ि असुरानी
टेक कहां हटे जात हौ। झगर अनेक ठानी पीठ न दिखानी
कबौं, सुरति भुलानी क्यों अधीर से जनात हौ॥ आवत न
लाज हिये त्यागत संग्राम भूमि, सङ्कित विशेष कम्पि काहें अ-
कुलात हौ। बिना श्रम जीते मघवादि धनुधारी बड़े, अबला बि-
सात कौन बात जो सकात हौ ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

पामर प्राण बचाइ कै, मुख मसि लाय परात।
धिक धिक पौरुष बाँहु बल, बैरी देखि डेरात ॥

॥ सोरठा ॥

यह छनभङ्ग शरीर, अन्तकाल ध्रुव मरन है।
नाम धरावत बीर, सन्मुख रन भल जूझिबो ॥

हरिगीतिका।

पुनि सिमिटि पलटे सुभट सब सुनि, उग्र बचन रिसाय कै।
लागे प्रहारन अस्त्र शस्त्र अनेक विधि समुहाय कै॥
तब सारथिहिं कहि अनिप चिच्छुर, रथ सवेग चलाय कै।
खल तिष्ठ तिष्ठ पुकारि देविहिं, कटु प्रयोग सुनाय कै॥
गुन खैंचि कान प्रयन्त धनु सन्धानि बान चलायऊ।
भभकत सरानल दिशि बिदिशि संग्राम मण्डल छायऊ॥
गन जरत इत उत दुरत भाजत जोगिनिन अकुलायऊ।
बरुणास्त्र अम्ब चलाय जल बरषाय अगिन बुझायऊ॥५४॥

पंचचामर।

बिलोकि कै महा प्रताप मूढ़ डाह मानि कै।
निकारि तीर त्रोन ते धर्‌यो कमान तानि कै॥
चलाय फेरि काढ़ि काढ़ि साधि साधि मारई।
बिना प्रयास देवि काटि काटि भूमि डारई॥ ५५ ॥
प्रकोपि शूल शैल शक्ति चक्र लै चलावई।
लहै न एक सिंह फानि चौकड़ी बचावई॥
उबाहि म्यान ते कृपान तीव्र धार ताकि कै।
हन्यो लिलार केहरी गिर्‌यो धरा कुलांकि कै॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥

छिप्र कूदि जगदम्बिका, करि चितन्य मृगराज।
महाक्रोध उर मैं जग्यो, गरजि चली जिमि गाज॥

झूलना ।

अष्ट दस पानि गहि तानि सन्धानि धनु शब्द घनघोर टङ्कोर कीन्हा । मन्त्र पढ़ि अयुत शर व्याल से फुंकरत हुंकरत झोकि कै छाड़ि दीन्हा ॥ चले नाराच गन लगे शिरभुज चरन कटत तन दानवन चिघरि परहीं । छूटि हिम्मत गई सेन व्याकुल भई नैन सूझै नहीं जूझि मरहीं ॥ ५८ ॥

शुद्धध्वनि ।

उर लगत बान, उलटत उतान, द्रुत तजत प्रान, कायर थहरैं । नभ उड़त मुंड, महि परत रुंड, बाह्वि रुधिर कुंड, भरि भरि ठहरैं ॥ दानव बिहाल, जनु प्रलय काल, भाजत उताल, अरुझत महरैं । बेधित सरीर, बिलपत अधीर, हिय कठिन पीर, घायल कहरैं ॥ ५९ ॥

दोहा ।

भज्यो गजरथ सारथी, बैरख ध्वजा तुरंग ।
सिमिटि एक ह्वै देवि इषु प्रविस्यो आय निखंग॥

रूपमाला ।

असुर सेनप देखि निज दल सकल भा संहार ।
सारथी कहि हांकि रथ खल, गराजि बारहिंबार ॥
देवि-सन्मुख आय आतुर, उग्र नेत्र तरेर ।
दम्भ करि अति जकत झिड़कत, बकत बचन करेर ॥६१॥

तरल तेज त्रिशूल तिच्छन, तमकि ताकि पवारि ।
सूर्य्य सहस प्रादिप्त दामिनि वेग की अनुहारि ॥
देखि कठिन कराल आवत कोटि कुलिश प्रचंड ।
दिव्य शस्त्र प्रहारि किन्हि महेश्वरी शतखंड ॥ ६२ ॥

त्रिभंगी ।

रथ कछुक पछरि कै फिरचो सम्हरि कै अहमित करि कै सठ कोप्यो । पत्रि सग्गि घहरि कै हठ उर भरि कै कर धनु धरि कै रन रोप्यो ॥ शर सजि गुन करषै घन सम बरषै नेकु न धरषै अभिमानी । इत त्रिभुवन रानी अधिक रिसानी झड़पि हहानी नगिचानी ॥ ६३ ॥

सुधानिधि दंडक ।

चाप जेह ऐंचिकै चढ़ाय कान लौं टकोरि, अग्नि दीप्त बान तानि शीघ्र साधि छाड़ि दीन । ज्वाल जाल ता समय प्रचंड जोतिमै फफात, युद्ध भूमि शत्रु के सबै नराच भस्म कीन । सप्त शायकै खरै शरासनै बहोरि जोरि, भंजि सारथी रथै तुरंग ते कियो बिहीन । अंग अंग छेदि बेधिकै अचेत सेननाथ, फेरि लौटि देवि बान त्रोन के भये अधीन ॥ ६४ ॥

हंसाल दंडक ।

बीति इक छन गयो बिगत मूर्छा भयो, खग्ग गहि हाथ जड़ तड़कि धावा । बपुष श्रोनित श्रवत कुमुख कटु बच बकत, कालप्रेरित बिवस निकट आवा ॥ बाम भुज ताकि तरवार की

वार करि, उछरि कै कूदि गो काटि कावा । चोट किंचित लगी देह नहि सग बगी, कोपि परमेश्वरी देखि दावा ॥ ६५ ॥

घनाक्षरी ।

लखि रुख केशरी बिलोकि मुख स्वामिनी को, छौंकि फानि चौकड़ी उड़्यो छलांग मारिकै । चिच्छुर लपेटि भेंटि चपरि चपेट दीन्ह, पंजन उठाय छोपि लीन्ह हहकारि कै । नखन बिदारि दांत काटि फारि कोख रोखि, बार बार छाड़त लोटारत पछारि कै । टूटि गई आसुरी घमंड की महान टेव, छूटि गई हिम्मत भयो बेहाल हारि कै ॥ ६६ ॥

शीघ्र भुवनेश्वरी चमूप बक्ष लक्ष ताकि, तेजपुंज बक्रधार विष्णु चक्र धारि कै । उग्र शब्द बज्र से कठोर घोर गार्जि, तार्जि, सिंह पै खड़ी ह्वै तर्कि छाड़ेऊ हुंकारि कै । चल्यो घहरात थहरात भूमि बार बार, मानो महाकाल जात रसना पसारि कै । खंड खंड काटि काटि कीन्ह रुंड छिन्न भिन्न मुंड महिषेश पास आयउ पवारि कै ॥ ६७ ॥

हरिगीतिका ।

जोगिनि बिकट गन असुर-सेन संघारि रन जय पाइकै ।
गावत हँसत नाचत झमकि निज स्वामिनी ढिग आइकै ॥
त्रिदिवशे बरषि प्रसून हरषित दुन्दुभ्यादि बजावहीं ।
श्री मातु पैज प्रताप लखि जै जयति शब्द सुनावहीं ॥ ६८ ॥

दोहा ।

चित्तुरशिर लखि दनुजपति, बिलखतसोचअपार।
जूझि अमित भट रन परे, घर घर परा खभार॥

घनाक्षरी ।

पूत भयो बाप बिनु बाप सुत के बिहीन, भ्रात को न भ्रात आदि सबै नात त्याज की । सभै असुरानी हाह मारि पीटि छाती रोवैं, देहको सम्हार औ रही न सुधि लाज की ॥ नाह को बखानि बल पौरुष प्रताप तेज, लोटति धरा मैं गति करुना समाज की । दीनता सशोक दुख दारुन वियोगी दशा, धीरता बिलानी भई सीमता अकाज की ॥ ७० ॥

दोहा ।

अति बलिष्ट सेनप-मरन समुझि समुझि दनुजेश।
क्रोधानल प्रज्वलितहिये, अरुन बिलोचन तेश॥

घनाक्षरी ।

मंत्र ठहराय निज मंत्रिन मिलाय राय, सेनप उदग्र आदि सुभट बुलाय कै । भाषत करेर भयौ कठिन अँधेर आज, चित्तुर समूह जाधे जूझे रन जाय कै। कीजिये न देर घेर लीजिये अनीक साजि, भली भांति मुख फेरि दीजिये लड़ाय कै । अंगना समेत गन जोगनी निपाति खेत, काढ़िये कसक फल बैर त चखाय कै ॥७२॥

दोहा ।

उच्चस्स्वर घन इव गरजि, बोले ते गर्बाय ।
दांव लिये बिनु कल नहीं, चले सकल सिर नाय ॥

पंचचामर ।

रथैं अनेक में जुते तुरंग जाति जाति के ।
नधे किते धुरंधरे गजेन्द्र भांति भांति के ॥
ध्वजा पताक केतु छत्र चामरे पटैतने ।
चढ़े महारथीन अस्त्र शस्त्र मैं बने ठने ॥ ७४ ॥
घने मतंग मत्त पै कितेक दैत्य राजते ।
जिन्है बिलोकि दिग्गजौ दिशापतीहु लाजते ॥
सजे बिशेष बाहने बिवान जान शोभते ।
बिचित्रता बनाव ते मनैं मुनीन मोहते ॥ ७५ ॥
असंख्य अश्व चंचले लिये सवार थर्कते ।
उमंगि एक एक पै कुलांक फानि तर्कते ॥
लगाम दांत चाबि खूर काटि काटि डांकते ।
जमैं थमैं कला करैं उठाय पुच्छ माकते ॥ ७६ ॥
कढ़े पदाति अप्रमान तीब्र अयुधै धरे ।
बिरूप रूप रिष्ट पुष्ट दुष्ट रुष्टता भरे ॥
कित अकाश मार्ग ते उड़ान साधते चले ।
मनो समीर प्रेरना चढ़े असेत बादले ॥ ७७ ॥

पद्धरी ।

करि कटक बिकट बहु बिधि बरुत्थ ।
गति पृथक पृथक मिलि जुत्थ जुत्थ ॥
इमि उमडि कियो क्रमशः पयान ।
रन कला कुशल दानव सयान ॥७८॥
बाजत निशान चय शंख भेरि ।
दुंदुभी ढोल तुरही नफेरि ॥
सुनि सुभट होत हिय अति उमंग ।
तन रोम उठे मन रुचत जंग ॥७९॥

करखा ।

अमित अक्षोहिनी सेन चतुरंगिनी साजि लै संग दनुजेन्द्र जोधा ।
देखि सम्पन्न ऐश्वर्य्य बिस्तार बल बमाकि अभिमान बस दमाकि क्रोधा ॥
नैन लाले भये भौंह बांके ठये चेति चिक्षुर निधन अति बिरोधा ।
कर्खे उत्तेजना देत हर्षितमना देवि परताप ते खल अबोधा ॥८०॥

दोहा ।

श्रेणीबद्ध सनद्ध दल, करि महिषासुर बीर ।
पुरुषरूप रथ चाढ़ि चला, समर भूमि रनधीर ॥

घनाक्षरी ।

अंधक उदग्र ताम्र उग्रलोम दुर्द्धरादि, दुर्मुख बिड़ाल चाम्र सेनप अपार हैं । महा वीर्य्यवान महा बाहु बिकराल मुख, वि-

जयी सुरेश रन बंकट जुझार हैं। जुद्ध उपयोगी श्रेष्ठ सज्जित सनाह टोप, चर्म बर्म त्रानबन्ध त्रिबिध प्रकार हैं। शांग शेल चक्र औ कृपान गदा शूल शक्ति चाप शर भिन्दि-पाल तोमर कटार हैं ॥ ८३ ॥

दोहा।

इत देवी निज स्वांस ते, प्रगट्यो जन्तु अनन्त।
बिबिध भांति बाहन विपुल अतुल बीर बलवन्त॥

तोमर छन्द।

दृढ़ बृहत काय बिशाल। दुष्कर्म मर्म कराल॥
कृत बिकृत रौद्र सुभाव। रनबांकुरा मन चाव॥ ८४॥
नख प्रखर तिच्छन दन्त। दृग अरुन श्रवन प्रयंत॥
दारुन भयंकर नाद। जनु निकर पति प्रहलाद॥८५॥
उद्यत उदंड गरीष्ट। निरसंक बंक बरीष्ट॥
त्रिदशेश्वरी रुख पाय। पद कमल माथ नवाय॥ ८६॥
शस्त्रास्त्र बपु ठटि लीन्ह। आक्रमन रिपुदल कीन्ह॥
बाहन प्रचुर दरशात। लखि बेग गरुड़ लजात॥८७॥

चौपैया।

सागर गिरि लोलै धरनी डोलै धूरि भूरि नभ छाई।
दिग्गज चिग्घारत धीर न धारत डगमगात अकुलाई॥
चलि कूर्म बराहा हलि अहिनाहा फन प्रति भार जनाई।
सुर सुमन बरीसत देवि प्रशंसत माहिमा अखिल बड़ाई॥८८॥

हंसाल दंडक ।

रथिन सों रथी गजपतिन सों गजपती, अश्वपति परस्पर समर ठाने । भिड़े पदचरन सों पदचरा जोड़ ताकि जोगिनिन गगन पथ राड़ फाने ॥ घात करि एक पै एक जिति जय करत, एक पै एक धनु बान ताने । होत अति सोर चहुँओर गलबल मच्यो, अकस इरिखाभरे भट रिसाने ॥ ८९ ॥

रोलाछन्द ।

सनकि तीर तन चुभत धमकि मूशल शिर फोरैं ।
उदर बिदारत शूल गदा जंघा भुज तोरैं ॥
काढ़त किरिच करेज कुन्तफर लाद निकारैं ॥ ९ ॥
काटत ग्रीव कृपान गाल बरशांगी फारैं ॥ ९० ॥
चक्र चलत खहरात मुंड भहरात घनेरे ।
बज्र गिरत घहरात ध्वंसि हय गज बहुतेरे ॥
चूर्न चूर्न रथ होत परत महि टूटि बिवाना ।
जुटत लड़त फटि हटत बहुरि सिमिटत मयदाना ॥

त्रिभंगी ।

कोटिन गन धावैं, अरिन सतावैं, पटकि दबावैं भूमि दरैं ।
गहि चरन उठावैं, घुमरि फिरावैं, नभ दिखरावैं प्रान हरैं ॥
रनमद मस्ताने, रकत-नहाने, अधिक उधाने, देवि भटा ।
दनुजात सकाने, मन अकुलाने, पद फिसिलाने, जात हटा ॥

जोगिनि हंकारत, उड़ि उड़ि मारत, कुमक बिड़ारत, असुरनकी ।
तकि खग्ग प्रहारत मुंड उतारत, कसक निकारत, सुरगनकी ॥
बदि सपदि पछारत, चट चिरि डारत, शोनित गारत मीजि धरैं
भरि खप्पर संचत दुअनन बंचत मेदनि नंचत केलि करैं ॥

दोहा ।

अस्त ब्यस्त रन महि परे, घायल घात्र अधीन ।
बिचली सेना आसुरी, भभरि भगेहल कीन ॥

छप्पय ।

छितिर बितिर निज कटक देखि महिषासुर माखा ।
देत कोटि धिक्कार रोकि अध-बीचाहिं राखा ॥
भागत लगत न लाज बृथा तन बिरद चढ़ायो ।
लोहा निरखि डेरात असुरकुल नाम धरायो ॥
सुनि दम्भ बचन ईर्षाभरे फिरे सुभट सरमाय कै ।
हठि भिरे जोड़ सों जोड़ तकि, कड़े शब्द अरराय के ॥

॥ दोहा ॥

तब उदग्र गज अग्रकरि, गन समग्र ललकारि
बिशिखासन शर बिषमधरि गर्बित चला प्रचारि

सारछन्द ।

श्रवन प्रयन्त टकोरि प्रत्यंचा, आकर्ष्यों खिसियाई ।
गति अनिवार्य अमोघ शिलीमुख, जलद सरिस झरि लाई ॥

ब्यथित बिशेष ब्यग्र देवीगन, मूर्छि परे छिति माहीं।
मींजत हाथ परे शरपंजर, कितने भट बिलखाहीं ॥
जात भजे कितने गन ब्याकुल, जुद्ध कामना हीना।
कितने चढ़त हटत ह्वै घायल, कंपत बदन मलीना ॥
जोगिनि मुरी दुरी रन तजितजि, मच्यो कोलाहल भारी।
त्राहि त्राहि जनरच्छक जननी, देवन दुखित पुकारी ॥

दोहा।

सेन परास्त बिचारि निज, देखि दानवन ढीठ।
बिबुधबिनय सुनि अम्बिका, चढ़ी केहरी पीठ।

सवैया।

चाप चढ़ाय प्रभंजन शायक छाड़ि सबै रिपु बान उड़ाई।
जोरि बहोरि हुतासन के शर छार कियो छन माहिं जराई ॥
फेरि कृपामृत दृष्टि चितै गन शीघ्र हरचो श्रम ब्याकुलताई।
पैठि बिडारात दैत्य चमू सुरशक्ति भयंकर मार मचाई ॥

घनाक्षरी।

प्रबल प्रचंड महालक्ष्मी बिशाल मूर्ति, दैत्य दल खेलहीं धका ढकेलि पींजती। हांक देत जोगिनी जमात संग झुंड झुंड मुंडन को काटि रुंड लातन सों मींजती। भुज जंघ तोरि तोरि हाड़न को फोरि फोरि, बोरि बोरि श्रोनित में मेदा मास गींजती। भूमि भार टारनी उबारनी सुरेश पद, रुधिर फुहारन की धारन में भींजती ॥ १०३ ॥

अजाउग्र गार्जि तार्जि दुर्गम संग्राम भूमि, घूमि घूमि झूमि झूमि आयुध प्रहारती। फेरि फेरि घेरि के देरेरि भट भेरि देत, टेरि टेरि हेरि हेरि सेनप सँघारती । बिचालि चली है चतुरंगनी अनी बेहाल, पहटि चहेट कै लपेटि रक्त गारती । जै जै जगदम्ब देव भाखत मुकुन्दलाल मर्दि मर्दि अस्थि मास गर्द करि डारती ॥१०४॥

हरिगीतिका छन्द ।

चामर उदग्र बिड़ाल अन्धक ताम्र उद्धत लड़ि मरे ।
बाष्कल कराल उग्रास्य दुर्मुख जूझि भट धरणी धरे ॥
असिलोम दुर्धर महाहनु सब असुर जोधा संघरे ।
बिनशित भये कटि गज तुरङ्गम टूटि स्यंदन रन परे ॥

सोरठा ।

निज दल नाश बिलोकि, महिषासुर अति कोपि कै ।
समर भगवतिहिं रोकि, सनमुख जल्पत दर्पि शठ ॥

घनाक्षरी ।

आई धौं कहांते धाय जाई कौन देव की है, भोरि भुलवाई कोने कौन धौं पठाई है । देवन सहाय की बलाय मोते सांची कहै, अजब निशङ्कता रु गजब ढिठाई है ॥ लीन्ही गन जोगिनी समर्थ है अनर्थ कीन्ही, दीन्ही बिचलाय दल दैतन नशाई है । जानत प्रताप न हमारो तिहुँ लोक तप्यो जानि परै इहां तोहि मृत्यु खींचि लाई है ॥ १०७ ॥

दोहा।

सुरन कहे नव बालिका, आय मचाई राढ़ि।
पठै तोहि जमराजपुर, बैर लेब सब काढ़ि॥

॥ सोरठा ॥

जोगिनि गन संहारि, बाहन हनि चौपट करौं।
सिंहकिशोर पछारि, लुलुहा पकरि उपारिहौं॥

सार छन्द।

मत्तालाप काल बस बादत, सुनि बोली महरानी।
सुरन जीत मन बढ़ा निपातौं, तोहिं आजु अभिमानी॥
जीवन अवधि आश नगिचानी, बीती भाग्य-भलाई।
देखब सब प्रताप प्रभुताई, अहङ्कार रौताई॥ ११०॥
जियन चहसि जो फुर सुरद्रोही, मानु सपदि मम बानी।
तौ तू छाड़ि विबुध अधिकाराहिं, सुनासीर-रजधानी॥
बससि पताल भागि सकुटुम्बनि, अधम पोंच अपराधी।
न तु हनि खड्ग तोर शिर खण्डबि, मेटब सकल उपाधी॥

॥ दोहा ॥

अस कहि रण आकांक्षिनी, दुर्गा सजग सक्रुद्ध।
महिषासुर सोहीं खड़ी, प्रफुलित जुद्ध विरुद्ध॥

गीताछन्द ।

सुनि रमा सदउपदेश हित दनुजेश अधिक रिसान ।
करि घोर नाद दुरातमा रथ हांकि हय नगिचान ॥
कहि मर्म बचन कठोर शठ तजि विषम शक्ति कराल ।
सिंहेश्वरी अधबीच काटि गिरायऊ ततकाल ॥ ११३ ॥

सारछन्द ।

पुनि शर सर्प छाड़ि असुराधिप, लहलहात धुकि धाये ।
फैलि गये समस्त संगर महि, देवी गन अकुलाये ॥
निज दल बिचल देखि जगमात्री गरुड़ायुध संचारी ।
छन मह नष्ट भये सब पन्नग, दैत्येश्वर कृतकारी ॥ ११४ ॥

लक्ष्मीबृत्त ।

काढ़ि तुनीर ते तीर तेजेश्वरी, धारि कोदंड सन्धानि टंकोरिकै ।
सारथी मारि संघारि बाजी रथै, छेदि गै पार बक्षस्थलै फोरिकै ॥
ब्यग्र दैतेन्द्र गम्भीर मूर्छा भई, छिप्र भू मै परा हाथ टक्टोरि कै ।
दंड पश्चात पै जागि गर्जा अभै, रूप भा केशरी दानवा छोरिकै

दोवै ।

पुच्छ हिलावत चरन चलावत, नाद करत भयकारी ।
फानि फलांग उड़त चारिहुं दिशि, बिचरत समर मझारी ॥
मारि नखाग्र काटि दशनानि गनजोगिनि कटक बिड़ारी ।
असुराबिजैनी उतरि तुरत निज सारदूल छहकारी ॥

दोहा ।

सिंह बेष महिषेश उत, इत देवी मृगराज ।
लड़त प्रबल इच्छा उभै, हँकारि हँकारि जयकाज ॥

कृपानछन्द ।

चोपि चपल कुदान, झूमि झोंकि झपटान, बल बिक्रम समान, करैं चोट नखरान । देह दीरघ बिशाल, पिंगलाक्ष भये लाल, मुख बाये बिकराल, बेग जीते पवमान ॥ चलैं तीखैं लुलुहान, दन्त दन्तन कटान, घात घात से धरान, काटैं नासिका औ कान । दोऊ सिंह बलवान, जुरे युद्ध मयदान, एक एक पै रिसान, ठाने घोर घमासान ॥ ११८ ॥ गति लाघव महान, लेत छापि छपकान, देत ठेलि पटकान, उठि भीरत कसान । रोपि पंजन उठान, पुच्छ केश फहरान, जुरि जुरि अरुझान, मुरि मुरि बिलगान मारि पंजन भगान, धाय धाय रपटान, घूमि आगे से घेरान, डांटि डांटि डकरान । दोउ सिंह बलवान, जुरे जुद्ध मयदान, एक एक पै रिसान, ठाने घोर घमासान ॥ ११९ ॥ जंग बिबिध बिधान, हटि हटि पछिलान, दै दबेरि झड़पान, मुठ भेरि कै कुदान । क्रूर शब्द घहरान, कन्धग्रीव झहरान, बज्र इव भहरान, दबि धरा थहरान ॥ दिगदन्ती चिघरान, कोल कूर्म मचलान, शेष शीश सिकुरान, सिंधु जल उछलान । दोउ सिंह बलवान, जुरे जुद्ध मयदान, एक एक पै रिसान, ठाने घोर घमासान ॥ १२० ॥ शैल शिषर पखान, जत्र तत्र छिलगान, रेनु छाई आसमान, भानु तेज मधुरान ।

देवी वाहनाधिकान, पौढ़ उद्धत उधान, दीन्हो भारि चपटान, कीन्हो घायल निदान, ॥ हरषित बिबुधान, हनैं दुन्दुभी निशान, द्वन्द संजुग बखान, करैं पुष्प बरषान। दोउ सिंह बलवान, जुरे जुद्ध मयदान, एक एक पै रिसान, ठाने घोर घमासान ॥ १२१ ॥

घनाच्छरी ।

चरन चलाय छद्मबेषी दानवाधिराज, भाजि चला केशरी लपेटि लीन्ह संगहीं । बालधी उठाये बाम बगल दबाये जात, दुर्ग नगिचात फिरि रोप्यो रन रंगहीं । छूटत बझत कोट फाटक त्रिराज्यो जाय, लरत लरत चढ़्यो महल उतंगहीं । टूटत कँगूरे खम्भ बुर्ज धौरहर आदि, फूटत अनेक गच पाहन सिलंगहीं ॥ १२२॥

दोहा ।

देखत उतकट उधम रन, दयितागन बिलखात।
बिकलनगरबासीसबै, उरपीटतपाछितात ॥१२३॥

दोवै ।

उच्चागार पगार भीति ते, जुगल सिंह बिछिलाने ।
गढ़ खांई पर आय परे उठि, बहुरि गरजि लपटाने ॥
उर्द्धस्वास श्रवत तन शोनित, परम श्रमित पसिनाने ।
निज निज दांव घात लहि मारत, बैरभाव बिरुधाने ॥१२४॥
थकित विशेष बिमुख असुराधम, झटित गुप्त ह्वै गयऊ ।
छन में कृतिम रूप धरि कुंजर, कज्जल गिरि सम भयऊ ॥

सुंड बढ़ाय लपकि केहरि धरि, दाबि दशन तर कीन्हा ।
देखि तड़ित सी उड़ी भगवती, खोभि खड्ग मुख दीन्हा ॥१२५॥

दोहा ।

पंचानन चट निकरि गो, उत महिषासुर बीर ।
होय तिरोहित कपटकरि, प्रगटेसि महिष सरीर ॥

हंसाल ।

रूप बिकराल भारी भयंकर महा, बेग पवमान रिसि अग्निवत धारि कै। मेघ इव गार्जि कइबार अभिमान युत, समर मद मत्त हटि चला हंकारि कै ॥ पीन तन पुष्ट दुर्द्धर्ष बिक्रम बली, तीब्र तर शृङ्ग बर तुंड झटकारि कै । पुच्छ छहकारि फटकारि पद टाप दिढ़, खौंदि रौंदत अमित सुभट महि पारि कै ॥ १२७ ॥

घनाक्षरी ।

थूथुन देरि भट संकुल पछारै महि, बिषम बिखान ते कितेकन सँहारई । मस्तक उठाय होंके केते भोंड़ि आय झोंके, बालधी भ्रमाय धाय धाय केते मारई । स्वास सों उड़ावत गिरावत धका ढकेलि, जहां जेहिं पावत उठाय कै लोकावई । कीन्ह्यो डवां डोल गन जोगिनी जमात गोल लाल लाल लोचन बिलोकि डरपावई ॥ १२८ ॥

रूपमाला ।

चलन शक्ति प्रधमकते फटि होत भूमि दरार ।
उथलि तुङ्ग तरंग सागर बढ़्यो मेंटि करार ॥

परत खसि खसि शिखर परबत गिरत बृच्छ अपार ।
बिकल सुरगन त्रसित अति अबलोकि समर खभार ॥

गीताछन्द ।

ज्यहि दिशि दबावत झपटि तहँ तहँ मचत अधिक हहाश ।
गन पाहि पाहि पुकारि देविहिं व्यथित बिकल हताश ॥
आरत गिरा करुनालया सुनि भई सिंहा-रूढ़ ।
गति सपदि सनमुख पहुँचि बोली सजग होसि बिमूढ़ ॥१३०॥

सोरठा ।

सुनत भगवती बात, क्रोधानल उर बरि उठा ।
शिर फेरत फफनात, खुरसों माहि खोदन लग्यो

अनङ्ग शेखर दंडक ।

अघी दुरातमा मलिष्ट दुष्ट कीन्ह क्लिष्ट नाद, आपको महापराक्रमी बिचारि घायऊ । बिपच्छ भाव धारि बैमनस्यता सम्हारि चित्त, मानि डाह क्रूरता गरूरता बढ़ायऊ । धँसाय सींग मेदनी उपारि भूधरै बिशाल, शीश पै उठाय कूदि झोंक ते चला-यऊ । जगन्निवासनी प्रतापसालिनी मुकुन्द मातु इन्द्रबज्र मारि चूर चूर कै गिरायऊ ॥ १३२ ॥

दोहा ।

पुनि गहि निज सारंग कर, शत शायक संचारि ।
अंग अंग लागे लहकि, पार निकरि गे फारि ॥

घनाक्षरी।

कारे गात भारे ते फुहारे चले शोनित के, मानो कज्जलाचल पनारे बहैं गेर के। ब्याकुल मुरारि घन घायन सिथिल ठाढ़ो, धरनी गिरायो डांटि नाहर दरेर के॥ मूरछा बिमुक्त क्रोध जुक्त उठा गर्जि नीच, मीचबस चला उग्र अम्बक तरेर के। इतै छाकि हाला अट्टहासिनी मुकुन्द अम्ब, चितै रही म्यान ते उबाहि समशेर के॥ १३४॥

सोरठा।

पूज्यो जानि करार, ज्वाल जाल इव चमकि कै भई कूदि असवार, ढीठ महिष की पीठ पै

सारछन्द।

कर उठाय तकि कन्ध तीब्र असि, लपलपाय कसि मारी।
गरदन भेदि निकसि भइ बाहर, गिरचो मुंड कटि भारी॥
पुरुष रूप ह्वै महिष ग्रींव ते, कटि प्रयंत कढ़ि आयो।
पांव दबाय तुरत श्रीमाया आधा धर अटकायो॥१३६॥
मन खिसिआय घोर रव गर्जत, बाहु जुद्ध शठ ठानी।
लरत घरिक लौं बीति गयो तब, सुरत्रातनि रिसियानी॥
पानि कृपान तानि अति आतुर, पकरि शिखा शिर छांटी।
रुधिर प्रबाह चलत धर धावत, कीन्ह खंड द्वै काटी॥

दोहा।

जय जय श्री अपराजिता देव प्रशंसहिं टेरि
सुमन बर्षि अति हर्षि मन हनहिं दुन्दुभी भेरि
दोवै।

शेष असुर जे बचे समर ते, अति सभीत अकुलाने।
त्यागि नगर गढ़ राज काज सब, तियन समेत पराने॥
जाइ पताल दुरे ततकालहिं, निज करनी फल पाई।
समुझि समुझि बिलखात दुखितमन, सुख वैभव प्रभुताई॥

घनाक्षरी।

जोगिनि जमात गन कौतुकी अनेक जात, जीति महा जुद्ध देव बन्धन छोड़ायकै। बीनती सुनाय चरनाम्बुज नवाय माथ, हुऐ अन्तरिक्ष स्वामिनी निदेश पाय कै॥ जैत पत्र हाथ इन्द्र बरुन कुबेर साथ, आये करतार सुर मंडली लिवाय कै। चारन गन्धर्व जस भाषत मुकुन्दलाल, नृत्य करैं अप्सरा बताय भाव गाय कै॥ १४०॥

दोहा

बजत बाजने बिजय के, जै दर्वी धुनि होति।
लगेकरन बिनतीबिबुध,जानिप्रनवकीज्योति॥

बिजयाछन्द।

जयति करतारिनी, सुगति दातारिनी, चरित बिस्तारिनी,

स्वजन निस्तारिनी । घट घट बिहारिनी, बिपुल तनु धारिनी, उत्तम प्रकारिनी, भक्त भयहारिनी ॥ बिबुध हितकारिनी, असुर संघारिनी, भार महि टारनी भवउदधि तारिनी । औढरहुँ ढारिनी बन्ध निरुआरिनी धरम आचारिनी गुननि आगारिनी ॥ १४२ ॥

घनाक्षरी ।

जै जै रूप बर्धनी विशारदा अनादि शक्ति, चेतना शुभा परा अपार्मिता सनातनी । जैति बेदबन्दिता अनन्दिता सुधर्म मूर्ति, कामदा कृपावती सुरारि बृन्दघातनी ॥ जै महाभुजे मनोगती भवात्मिके उदार, आदि सृष्टि रूपा महिषासुर-निपातनी । जै अ-जा अनन्तनी सुबुद्धिदा मुकुन्दलाल, तुष्टि पुष्टि शान्ति सिद्धि स-भ्यता प्रदातनी ॥ १४३ ॥

अनङ्ग शेखर दंडक ।

प्रणम्य पद्मलोचनी बिमोचनी गलानि क्लेश, आधि ब्याधि शोक मोह काम क्रोध दावनी । वियोग रोग राग दोष क्षो-भिता मलीनतादि, आस त्राश दीनता दरिद्रता नशावनी ॥ बिषाद शाप पाप ताप गंजनी ब्यथा बिकार, भंजनी ग्रहार्ति दुःख मूर्खता मिटावनी । बखानहीं कथा पुरान शास्त्र वेद नेति नेति, गावहीं मुकुन्दलाल सेत कीर्ति पावनी ॥ १४४ ॥

घनाक्षरी ।

बन्दत मुनीन्द्र सिद्ध किन्नर गन्धर्ब देव, बरुन पुरन्दर कुबेर माथ नाय के । अतुल प्रभाव बल बिक्रम प्रताप कहि, पुलकत

बिपुल बड़ाई गुन गाय कै ॥ धूप दीप चन्दन कपूर आरती उतारि, पूजत पदाराबिन्द सुमन चढ़ाय कै। धन्य धन्य स्वामिनी सराहत मुकुन्दलाल, बार बार बिनवैं महातम सुनाय कै॥१४५॥

सवैया।

मारि बली महिषासुर को सब देव अकंटक कीन्ह सुखारी।
लीन्ह बड़ाई बड़ी जग की अरु दीन्ह बहोरि गई अधिकारी॥
दीन-निवाजनि पीन-दया सरनागत की प्रतिपालनहारी।
ध्यावत तोहि लहै मनबांछित लाल मुकुन्द पदारथ चारी॥
भेद अपार चरित्र अचिन्तन रूप अगोचर ध्यान न आवैं।
जोति अपूर्ब प्रदीप्त महा उपमान मिलै द्युति देखत भावैं॥
आनन एक कहा बरनै सहसाननहू काहि पार न पावैं।
विश्व रचै परिपालै हरै बिरदावलिया इमि बेदन गावैं॥

॥ दोहा ॥

बार बार सिरनाय सुर, बिनवत भक्ति दृढ़ाय।
सुनि देवी सन्तुष्ट ह्वै, बोली मन हरषाय॥

दोवै छन्द।

करब सदा सहाय हित तुम्हरो, बुद्धि कर्म मन बानी।
धीरज धरहु देव ह्वै निर्भय, सत्य प्रतिज्ञा जानी॥
जातुधान खल असुर जात जे, जब बढ़िहैं दुखदाई।
तब हम प्रगटि शीघ्र हतिहों रन, हरब भूमि गरुआई॥

मांगहु बर जो भाव मन माहीं, आजु देउँ सब सोई ।
बसहु स्वतन्त्र करहु जग कारज, जो जेहिं पद पर होई ॥
और सुनो महिषासुर पुर गढ़, भरयो द्रव्य समुदाई ।
निज निज बस्तु जांचि लै लीजै, दीजै शेष लुटाई ॥

हंसाल दंडक ।

इन्द्र कर जोरि तन पुलकि बोले गिरा, मूर्ति मन रंजनी प्रीति चीन्हा । पाय तव कृपा अभिलाष परिपूर्न भा, सबहिं सब भांति अधिकार दीन्हा ॥ महिष बल शालि दल घालि कमलानने, मोहि सिंहासनासनी कीन्हा । जरत सुर मंडली शत्रु क्रोधाग्नि परि, धर्म करि सरन निज राखि लीन्हा ॥ १५१ ॥

दोहा ।

पूजि गई मन कामना, तदपि देखि अनुकूल ।
मांगत बर हम देहु सो, निज भक्ती सुखमूल ॥

शुभगदंडक ।

और इक प्रार्थना सुनहु मम स्वामिनी, देश उपकार बर देहु मन भावहीं । जे नरा नेम संजुक्त श्रद्धा लिये, भक्ति रस मगन तब पद कमल ध्यावहीं ॥ नाम आराधना साधि निशि बासरै, निजै रन पैज लीला रुचिर गावहीं । कुशल कल्यान आनन्द ऐश्वर्य्य बहु रिद्धि सिधि सम्पदा तासु गृह छावहीं ॥ कार्ज निर्विघ्न निर्बाहि मंगलमुखी, पुत्र प्रमदादि परिवार सुख पावहीं ।

शील सन्तोष गुन बुद्धि बिद्या बिमल, जोग्य करतब्य सद धर्म चित लावहीं । शत्रु भयत्तय ग्रहारिष्ट बाधा रहित, सदा सत संग मैं प्रेम उपजावहीं ॥ करहिं शुभ कर्म पथ चलहिं श्रुति सन्तमत, अन्त जगतारनव पार तरि जावहीं ॥ १५४ ॥

सारछन्द ।

सुरपति गिरा भक्ति हित सानी, सुनि स्वामिनि अभिलाषी ।
अन्तरधान भई करुनाकरि, एवमस्तु मुख भाषी ॥
देव पालि देवी अनुशासन, चढ़ि चढ़ि रुचिर विवाना ।
निज निज नगर चले प्रमुदित ह्वै, लहि इच्छित बरदाना १५५

दोहा ।

जन मुकुन्द अनुरागि मन, रसना करन पवित्र ।
जथाबुद्धि बरनन कियो, देवी पैज चरित्र ॥ १५६ ॥
जेहि नर यहि गावहिं सुनहिं, होहिं मनोरथसिद्ध ।
रिपुहिं जीति पावहिं बिजय, धन बैभव की वृद्ध ॥१५७॥

इति श्री मुकुन्दीलाल कृत देवीपैज प्रथम भाग संपूर्णम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीदेवीपैज दूसरा भाग ।

हंसाल दंडक ।

सुमिरि गनराज वागेश्वरिहिं ज्ञाननिधि काव्य करतार बर जुगल ध्यावों । बन्दि शिव शिवा सिय राम गुरु बिभाकर शुभद चरनाम्बुरुह माथ नावों ॥ जानि निज किंकर मुकुन्द कवि प्रार्थिहीं कीजिये कृपा जेहि सुमति पावों । जासु बल दूसरो भाग देवी-पयज बिजयरन चरित कछु बरनि गावों ॥ १ ॥

देवनि द्वन्दरिपुहीन मखभाग लहि अभै निर्विघ्न जग कार्ज करहीं । स्वबस सबलोक बिनुभार सोहति धरा समय पर मेघजल कृषी भरहीं ॥ बिविध तप तीर्थ जम नियम आचार ब्रत जोग जप साधना धर्म धरहीं । नीति अनुहार ब्योहार नरनाह करि प्रजा-प्रतिपाल दुख दोष हरहीं ॥ २ ॥

दोहा ।

शोक बयर बाधारहित, सुख बीते चिरकाल ।
बहुरि बढ़े दानव प्रबल, शुम्भ निशुम्भ भुआल ॥

गीतिका छन्द ।

प्रथम आइ पताल ते भुवलोक तप कीन्हे घने ।
तोषि प्रगटि बिरंचि बोले मांगु बर हरषित मने ॥
नमित शुम्भ निशुम्भ गहि पद कामना मन यों कही ।
पुरुष जाति सुरादि मानुष हमैं रन जीतैं नही ॥ ४ ॥

विष्णुपद ।

कहि अज एवमस्तु अपने पुर हंसारूढ़ गये ।
इत दो भ्रात पाय बर बांछित परमानन्द भये ॥
सुक्राचार्य्यहिं पूजि हर्षि गुरु राजा शुम्भ किये ।
करि जुबराज निशुम्भ तिन्है पुनि विद्या युद्ध दिये ॥ ५ ॥
पुनि दल दैत्य बटोरि बन्धु दोउ दुर्गम दुर्ग बनाये ।
हिमगिरि निकट शुम्भपुर आदिक नगर बिचित्र बसाये ॥
अगिनित बीर बिपुल पद भूषित पापातमा कुचाली ।
दुर्जय दुराचार दुष्कर्मा अमित द्विरदबल-शाली ॥ ६ ॥

रूपमाला ।

चंड मुंड प्रचंड सेनप धूम्रलोचन बीर ।
रक्तवीज द्रुहिद तनय बहुकाल कारन धीर ॥
धूम्रबंसी शत दइत जेहिं संग असुर अलेख ।
कोटि बिर्य्य पचास दानव अति भयानक बेख ॥ ७ ॥
कम्बु चौरासी उदायुध हैं छियासी नाम ।
मौर्य्य नामक अमित जोधा अटल पद संग्राम ॥

दुरद हयरथ बिबिध बाहन बिपुल पदचर जूह ।
सूर समर जुझार बंकट अस्त्रशस्त्र समूह ॥ ८ ॥

सरसी ।

शुम्भ निशुम्भ अतुल बल जोधा शैलाकार सरीर ।
बारिद सरिस नाद अति उत्कट समर भयंकर धीर ॥
करि कुमंत्र चतुरंगिनि सेना साजि आक्रमन कीन्ह ।
देश देश लरि दीन्ह पराजय जीति भूप सब लीन्ह ॥ ९

महा भुजंगप्रयात ।

सभा शुम्भ सिंहासनसीन बोला सबै सेन स्वामी निशुम्भै सुनाई ।
बड़े स्वारथी देव बैरी हमारे करैं स्वर्ग को राज निर्भय सदाई ॥
चढ़ो रक्तबीजादि लै दैत्यसेना घन घोर संजोर कीजै लराई ।
धनाधीस गन्धर्ब देवेश देवा प्रचेतादि को जीति लीजै बड़ाई ॥ १० ॥

सोरठा ।

कीजै और उपाय, जग्य होम कृत साध विधि ।
दीजै प्रथा उठाय, सुरन भाग पावैं नहीं ॥ ११

सारछन्द ।

अज्ञा पाय निशुम्भ नाय शिर साजि सेन असुरानी ।
चढ़ा शक्र पै महा जुद्ध करि छीनि लीन्ह रजधानी ॥
बरुन कुबेर जच्छ विद्याधर जीति शुम्भ यह आनी ।
लै लै दंड कियो अपने बस छांड़ि दियो अभिमानी ॥ १२ ॥

भुजंगप्रयात ।

लह्यो शुम्भ स्वाधीनता राज भारी ।
तिहू लोक को एक भा छत्रधारी ॥
अहंकार संजुक्त ब्यापार सारो ।
करै नित्त गीर्वान देशा निकारो ॥१३॥

त्रिभंगी छन्द ।

सब असुर सुरारी सुरसंतापी हिंसक पापी दुखदाई ।
हठ कपट कलापी झूठ प्रलापी जगपरितापी अन्याई ॥
घर घर के मर्मी निठुर कुकर्मी प्रकृति अधर्मी धुतताई ।
हारक पर-घरनी लम्पट करनी जाइ न बरनी अधमाई ॥१४॥

दोहा ।

देखि अनीताचरन बहु, देव बिकल दुखदीन ।
ह्वै इकत्र हिम गिरि गुहा शोचत बिपदाधीन ॥

हरिगीतिका छन्द ।

बिधि-बरप्रसाद अबध्य शुम्भ निशुम्भ सबहिं सतावहीं ।
कर पुरुष जाति न मरन है त्यहिं हेतु रन जय पावहीं ॥
महिषेशमर्द्दनि कृपा पूर्वक प्रगटि अवसि नशावहीं ।
सिद्धान्त करि धरि ध्यान देवन देविचरन मनावहीं ॥१६॥

द्रुतबिलम्बित ।

जयति आदि अगम्य अनन्तिनी, निरगुना निरुपाधि महन्तिनी ।
चरित हेतु सरीर धरन्तिनी, सुरन कार्य्य सुधार करान्तिनी ॥१७॥

दनुज सेन समूह सँघारिनी, धरनिभार अपार उतारिनी ।
अखिल संसृति मूल अधारिनी, जन मुकुन्द बिपत्तिविदारिनी ॥१८॥

महा भुजंगप्रयात ।

नमो सिद्ध बुद्धे प्रदातार भद्रे महारौद्र रूपा अनूपा भवानी ।
प्रणम्ये सदाचारिनी देवि दुर्गे परे प्राकृते सर्बभूते प्रधानी ॥
नमस्तेस्तु नारायणी कम्बुग्रीवे बिशालाक्षि सौभाग्यमूर्तें सयानी ।
नतोहं मुकुन्दे तुरीया अतीता पुनीता अजीता कहैं बेदबानी ॥

घनाक्षरी ।

पाहि पाहि परमेशि परमा पुरातनापि पारबती अपरमपार प्रभुताई है । त्राहि त्राहि त्रिदिवेश त्रातु त्रिपुरारि त्रिया त्रिगुना त्रैवृत्त त्रिभुवन ठकुराई है ॥ द्रवहु प्रसीद देवि देवन दरस दीजै दानवदलनि बिरदावलि सोहाई है । सुरनसमाज सरनागत मुकुन्दलाल स्वामिनी सहायता को आसरा सदाई है ॥ २० ॥

हंसालदंडक ।

सुरन आरत गिरा बिनय करुनाभरी सुनत गिरिजा प्रगटि निकट आई । कृपाकरि चितै चख चारु पंकजमुखी हित बचन बोलि धीरज धराई ॥ शुम्भ दनुजाधिपति मारि भ्राता सहित कटक संघारि महिभार हरिहों । फेरि अधिकार सब देवतन अभय करि इन्द्र शिर राज को मुकुट धरिहों ॥२१॥

कहतही कहत अनुभव सात्विक जग्यो गौर सर्बाङ्ग मैं चमतकारी । तुरत तनु कोश उत्पन्न भई कौशिकी मनहुं द्युति

दामिनी देहधारी ॥ रूप बलरासि आभास पसरति किरिन जोति अखंड छबि तेजधारी । हरषि पुष्पांजली बरषि देवन बदत जयति जगदम्ब परताप भारी ॥ २२ ॥

सच्चिदानन्दमैं मूर्ति दैदीप्त लखि दैत्यसंघारिनी शक्ति जानी । हृदै आनंद लहि तोष बिश्राम मन सत्य संकल्प विश्वास मानी ॥ प्रेम परिपूर्ण परशंसि स्रद्धा सहित धन्य लीला अगम बेदबानी । प्रनय बहु भांति करि प्रार्थना निर्जरा विदा ह्वै दुरे कहि जय भवानी ॥ २३ ॥

दोहा ।

जेहि तन ते चंडी कढ़ी भयो सो वह आतमश्याम।
स्यहिंकारन कृष्णा अपर, परयो कालिका नाम॥

सारछन्द ।

दैव जोग इक दिवस बिचरते चंड मुंड तहँ आये ।
देखि रूप कौशिकी अनूपम ह्वै मन विवस लुभाये ॥
शुम्भ नृपति के जोग्य सुन्दरी यह सम्माति ठहराई ।
बिनु परिचय दोउ चले तहां ते बार बार बलि जाई ॥२५॥

घनाक्षरी ।

आये ते सभा के बीच सरस हुलासभरे, महा महा महारथी बैठे दरबार मैं । राजत सिंहासन पै शुम्भ दानवाधिराज, निकट निशुम्भ जुवराज अधिकार मैं ॥ हाथ जोरि माथ नाय बोले खल चंड मुंड, नाथ उभै कामिनी हिमाचल पहार

मै । तामे एक दिव्यद्युति दामिनी अनादरति, कृष्णारग दूजी तरुनापन उभार मै ॥ २६ ॥

दुर्मिल सवैया ।

लहरै सुखमा मुखमंडल पै, सुठि दिव्यसरीर छटा छहरै ।
फहरै पट भूषन आप जगै, चिलकै चहुँघा दृग ना ठहरै ॥
डहरै गति मन्द गयन्द लजै, छुटि केशकलाप छवा झहरै ।
बिहरै तुहिनाचल पै ललना, मन लाल मुकुन्द मुनिन्द हरै ॥

सुन्दरी सवैया ।

चरनाम्बुज की दुति लाली लसै, तरवा तर मानहु अंशु प्रकाशै ।
श्रुति छोर प्रयन्त बढ़ी अखियां, दमकै दशनावलि हास बिलाशै ॥
विधि की करतूति न जानि परै, वह आपहिं आविरभाव बिभाशै ।
कबि लालमुकुन्द कहा बरनै, बलि जोगिनहूं हिय हेरि हुलाशै ॥

घनाक्षरी ।

जा तन सुगन्ध ते दशो दिशान ब्याप्तमान, निश्चै अस जानि परै देवी अवतार है । देखे केशी मेनका घृताची रम्भा उर्ब-स्यादि कोटि गुनहीन सब उपमा असार है ॥ सुकबि मुकुन्द एक आनन बखानै कहा, सहसाननहुं कहि पावत न पार है । येहो असुरेश्वर सो लक्ष्मी रतन जानि ग्रहन करीबे जोग्य सबहीं प्रकार है ॥ २८ ॥

गीता छन्द ।

जिमि सरितपति किंजलकमाला, आभने अंशुक दीन्ह ।
ऐरावतोच्चैश्रवाकरि हय इन्द्र सों लरि लीन्ह ॥

लहि बरुन छत्र कुबेरनिधि जिमि प्रजापति रथ आनि ।
तिमि ब्याहिये चन्द्राननी वह सकल बिधि सनमानि ॥३०॥

सोरठा ।

सुनत बात असुरेश, चंड मुंड दोउ भ्रात की ।
दियो तुरत आदेश, मन प्रसन्न ह्वै पुलकि तन ॥

गीताछन्द ।

दैत्य इक सुग्रीव नामक ताहि कहि समुझाय ।
रचै जा बिधि कामिनी वह करहु तौन उपाय ॥
चल्यो सो सुनि स्वामि आज्ञा तुहिन गिरि पर आय ।
चंडिकहिं देखि प्रनाम करि कर जोरि माथ नवाय ॥३२॥

दोहा ।

अन्तरजामिनि अम्बिका, जानि गई सब भेव ।
तदपि भेद पूछन लगी, चहत किये निरबेव ॥३३॥
काको पायक जात कित, कौन अर्थ याहि ओर ? ।
भूलि पर्यो केहि खोज मैं, इत निर्जर बनघोर ? ॥

दुर्मिलसवैया ।

पठये इत शुम्भ भुवाल हमैं तुम्हरे प्रति प्रेम की बात कही ।
जिन्हकी प्रभुता तिहुँ लोक तपै अरु कौनहु बस्तु अभाव नही ॥
बरि लीजै तिन्है नवला चलिकै बरजोग्य परस्पर भाव सही ।
सुख पूर्वक भोग बिलास सदा पदवी जग स्वामिनि आसु लही ॥

घनाक्षरी ।

अल्प मुसुकाय अम्ब बतिया बनाय बोली, इच्छुक अवश्य मैं तुम्हारो कहा करिहों । होनहार भावी गति रचना बिधाता जानै, दाख भद्र पूर्ष अवलम्ब अवधारिहों ॥ भूल किम्बा मूर्खता प्रतिज्ञा ह्वै परी है किन्तु जासों लड़ि समर धराके बीच हारिहों । देव दानो चाहे नर किन्नर मुकुन्दलाल, ताके साथ सानुराग बेदबिधि बरिहों ॥३६॥

दोहा ।

सुनि साहस चर हँसि कह्यो, चितै भगवती पाहिं
शुम्भनिशुम्भसमानकोउ, नहिंप्रतिभटजगमांहिं

सवैया ।

प्रन सूचित होत असत्य हमैं परिहास अनर्थ अचर्ज्ज भरचो है । गति है प्रमदा बलहीन सदा अबला अस सार्थक बर्न परचो है । सुकुमारि सलोनी कृशोदरिका कबि कोविद नाम बिचारि धरचो है । कबहूं दृग देख्यो नहीं अबलौं कबहूं रमनी रन भूमि लरचो है ॥ ३८ ॥

घनाक्षरी ।

जासु बल बैभव समान नहिं आनजग, महाराज शुम्भ आज तीनों लोक स्वामी हैं । सेन चतुरंगिनी सहायक समूह जाके, सेनाध्यक्ष रक्तवीज आदि बड़े नामी हैं ॥ बन्धु बलवान रन बंकम निशुम्भ जाको, बरुन कुबेर पुरुहूत इन्तजामी है । कहां

लौं प्रभाव कहि भाद्रिके बतावैं तुम्हैं, नाग नर किन्नर सुरादि अनुगामी हैं ॥ ३९ ॥

सारछन्द ।

परम धनुर्द्धर धीरबीर जग लीक बिराजति जाकी ।
शुम्भ निशुम्भ समर सनमुख ह्वै भई पराजय ताकी ।
बस न चलत कछु बिधि हरिहर को देखि अमित कटकाई
तासों बैर ठानि जय चाहहु केवल उभै लुगाई ॥ ४० ॥

दोहा ।

बनिता की गनती कहा, मृषा करहु अभिमान ।
चलहु छाड़ि हठ कामनी, तब ह्वैहै कल्यान ॥

सोरठा ।

हमतें करत बिवाद, ऐहैं दूजे दैत्य जौ ।
तब कि रही मरजाद, बरजोरी लै जाइहैं ॥

घनाक्षरी ।

ब्यंगित बचन कह्यो कालिका बसीठ प्रति, येहो दूत कहो जाइ शुम्भ सों बुझाइ कै । सिसुता सुभाव हानि लाभ के बिचार बिनु, कौशिकी जो कीन्हीं प्रन खरो सौंह खाइ कै ॥ जीति जुद्ध भूमि लरिबे को अहंकार तोरि, ले चलैं लिवाय इन्हे पालकी चढ़ाइ कै । ब्याहि लेवैं दैत्य बंस रीति अनुसार करि, मंगल विधान भले वाजने बनाइ कै ॥ ४२ ॥

दोहा ।

दैत्येश्वर सों बात मम, जथा तत्थ्य कहि देहु।
जो बिवाह करिबो चहो, तौ रन चढ़ि लोहलेहु॥

सोरठा ।

सुनत दूत खिसिआय, लौटि गयो दरबारको।
निज स्वामी ढिगजाय, समाचार लाग्यो कहन॥

सवैया ।

जुवती जुग जो वह हैं गिरि पै, गति गूढ़ अभेद न होत लखाई । केहि भांति अनेक बुझाइ थके, नहि लागत एकहु जुक्ति उपाई ॥ उनकी सुनि दर्पभरी बतियां, बिसमै मन होत बिचारि ढिठाई । प्रन ठानि कहैं रन जो जितिहैं, त्याहिं संग करों सनबन्ध सगाई ॥ ४६ ॥

सरसी ।

शुम्भ निशुम्भ सभासद मंत्रिन सुनि सब हँसे ठठाय ।
सहज सभीत बुद्धि लघु प्रमदन सदा अबल अनुपाय ॥
सो प्रन रोपि जुद्ध बदि मांगत हैं कामिनि असहाय ।
साजि भट कछु पदचर चढ़ि जावैं लै आवैं डरपाय ॥४७॥

रूपमाला ।

दियो आयसु धूम्रलोचन साजि निज दल जाहु ।
साम दाम बिभेद विधि समुझाइ कै छति लाहु ॥

तबहुँ जो मानै नहीं वह मन हठीली बाम ।
दंड करि पश्चात ल्यावहु तोरि मद संग्राम ॥ ४८ ॥

छप्पय ।

लहि निदेश असुरेश कियो धूमाक्ष पयाना ।
बिरद बान्हि बरबीर निकर निकरे मयदाना ॥
लीन्हे परस त्रिशूल शेल सांगी धनुबाना ।
भिन्दिपाल मुदगर प्रचंड पटु कुन्त कृपाना ॥
बाजि रहे बाजने जुद्ध के, मन उछाह उपजावहीं ।
मदभरे दनुज गर्जत अभै जहँ तहँ गाल बजावहीं ॥४६॥
इत बृन्दारक बृन्द प्रगट ह्वै बिनय सुनावत ।
मातु अमित दल लिये धूम्रलोचन खल आवत ॥
कीजै ताहि विध्वंस हमन कहँ अति दुख दीन्हा ।
अस कहि सुर शस्त्रास्त्र भगवतिहिं अर्पन कीन्हा ॥
देवी प्रभाव पुनि केशरी, अनायास तहँ आयउ ।
रन समय कार्ज औसर समुझि निज स्वामिनि मन भायऊ ॥

गीताछन्द ।

गिरि निकट पहुँचा धूम्रलोचन दैत्यदल ठहराय ।
जेहि थल बिराजत सिद्धिरूपा गयो तहँ गर्माय ॥
कटु शब्द बोला अरी बामा शुम्भ त्रिभुवन-नाह ।
चलि प्रेम संजुत संग त्यहि निज करत क्यों न बिबाह॥५१॥

दोहा ।

जो भल चाहहु आपनो, चलहु हमारे साथ ।
न तु जबरी लै जाइहौं, पकरि तिहारो हाथ ॥

रूपघनाक्षरी ।

बोली मातु कौशिकी जो प्रथम बसीठ आयो तासों निज आशय मनोरथ कह्यो बुझाय । तुमहूँ विचारो भंग कीन्हे प्रतिज्ञा नुष्टान लगिहै कलंक हमैं मिथ्याबादिनी कहाय ॥ जोपै बल- वन्त शूर संजुग समर्थवान, क्यों न जुद्ध जीति लेत शुम्भ औ निशुम्भ आय । सुनत मुकुन्द मातु चंडिका असंक बैन, केश धरिबे को धूम्रलोचन चला रिसाय ॥ ५३

दोहा ।

देखि ढिठाई असुर की, क्रोध भवानी कीन्ह ।
अनल शब्द हुंकार से, सपदि भस्म करि दीन्ह ॥

दोवै ।

सेनप-मरन देखि दानवगन मार मार करि धाये ।
दीपशिखा सी देखि भगवतिहिं खल पतंग घिरि आये ॥
लगे प्रहारन शूल शक्ति असि तकि तकि तीर चलावैं ।
इत दोउ मातु कौशिकी कृष्णा सहजै काटि गिरावैं ॥ ५५
सिंह किशोर प्रबिसि दल भीतर धरि धरि असुर पछारै ।
चीरि देत द्वै भाग खंड करि कितनन उदर बिदारै ॥
पंजा मारि झारि पांजर भुज कन्ध ग्रीव झहरावै ।
छोपि लेत चौफाल छपकि महि गर्दहिं मर्दि मिलावै ५६ ॥

जैकरीछन्द ।

ज्यहिं दिशि टूटि परै समुहाय अगिनित सुभट लोठारत जाय ॥
कितनन मारेसि पुच्छ भ्रमाय बहुतन डारेसि दाँत चबाय ॥ ५७
लड़ति कालिका शत्रुन साथ लीन्हे खड्ग तिब्र तर हाथ ॥
कटि कटि गिरत मेदनी माथ जूझत जहँ तहँ दैत्य अनाथ ॥ ५८

घनाक्षरी ।

शायक कोदंड साजि गाजि चंडिका प्रचंड, दैत्य दल राजि जहां तहां बिचलावती । शूल शांग शक्ति शेल नाना विधि ते प्रहारि, करत संघार ताको जाको जहां पावती ॥ कबहुँ पयादहिं फिराति रन चारो दिशि, कबहुं सकोपि मृगराज चढ़ि धावती । तीरथ स्वपानि शैलबासिनी मुकुन्द मातु, अधम सुरापी मारि स्वरग पठावती ॥ ५९ ॥

दोवै ।

लरि मरि मिटे सकल दानव भट, भागि बचे अधमारे ।
अति दुर्दशा घाव बस व्याकुल, शुम्भहिं जाइ पुकारे ॥
महाराज वह सिंहबाहिनी, दैवी गति प्रभुताई ।
भस्म धूम्रलोचन करि छनमें असुरन मारि गिराई ॥६०॥

दोहा ।

सखी कालिका सोखरन, सबल केहरी साथ ।
दनुज निधन लागि अवतरी, जानि परत असनाथ ॥

सोरठा।

कैधों हेतु बलाय, प्रगटी असुर अभाग्य ते।
चरित बरनि नहिं जाय, समुझि२ धरकत हियो॥

हंसालदंडक।

सुना दैतेन्द्र जब धूम्रलोचन मरन, अपर सैनिक सुभट परे धरनी। करत मन तर्कनानिष्ट घटना समुझि, बरी क्रोधाग्नि उर परी जरनी॥ सचिव सन कहत आश्चर्य्यवत बामगति, जुद्ध कृत निपुन बिपरीत करनी। शत्रुता साधि प्रनरोपि निर्भय लरत, जानि अस परत कोउ देव-त्ररनी॥१३॥

दोवै।

निकट निशुम्भ त्यागि निज आसन उठि भ्रातहिं शिरनावा।
कहन लागु शठ इन्द्रादिक सुर बिनु श्रम समर हटावा॥
गनती कौन देव अबलन की पसु केहरि बनचारी।
सो की जुद्धकला बिधि जाने नहि भट कोउ धनुधारी॥१४॥

हंसालदंडक।

अनुज की बात सुनि शुम्भ दनुजाधिपति चंड मुंडादि भट चट बुलावा। कह्यो साजि कटक बहु बिकट चतुरंगिनी हिमशैल निकट चढ़ि करहु धावा॥ घेरि चहुं ओर ते प्रथम हठि केशरिहिं शूल शर शक्ति ते हनि नसावो। बहुरि मुख मोरि रन तोरि अभिमान प्रन बांह गहि देवनिन बांधि ल्यावो॥१५॥

दोवै ।

शुम्भ रजाय पाय सेनप बर चंड मुंड दल साजे ।
पनव निशान भेरि सहनाई बजे जुझाऊ बाजे ॥
संकुल रथ रव होत कोलाहल अमित बाजि गज गाजे ।
पदचरवृन्द बृन्द बहु गवने आयुध बिबिध बिराजे ॥६६॥

घनाक्षरी ।

सुरन जितैया लड़वैया दैत्य सूर बीर बान्हे बीर बाना साव-धान बड़े चाव ते । पैदल बढ़ावते झुमावते मतंग मत्त, रथ दउ-रावते तुरंगम नचावते ॥ परबत श्रेनी थर नांघते उछाहभरे, राह पथरीली बन बिहड़ैं बचावते । समर सपूती मज़बूती को गुमान गहे, आये जुद्ध क्षेत्र अति ऊधम मचावते ॥ ६७ ॥

चंचलावृत ।

शान सों चहूं दिशान फेरि फौज चंडमुंड ।
जोग्य जोग्य दानव नियुक्त कीन्ह झुंड झुंड ॥
लाम बांधि जुद्ध को दियो निदेश यों बुझाय ।
जल कै धरो सचेत चण्डिका न भाजि जाय ॥ ६८ ॥

दोहा ।

इत सुरसेब्या शिखरतें, देखि अमित दनुजात ।
पुलकि कालिका सों कही, मन्द मन्द मुसुकात ॥

सरसी छन्द ।

दैत्य असंख्य चढ़े गिरि ऊपर करि रन अनु-सन्धान ।
देवन जीति नितान्त ढिठाने बाढ़े मन अभिमान ॥

दीजै आश पूजि लरिबे की चलि कीजै संग्राम ।
अस्त्र शस्त्र हनि करहु प्रान बिनु बहुरि जाहिं नहिं धाम ॥७०॥

सारछन्द ।

सैनिक गन उत धरन भगवतहिं अति समीप घिरि आये ।
धरु धरु मारु मारु चहुँदिशि ते सोर कठोर लगाये ॥
बोला चगड प्रचगड शब्द करि सुनो मनोहर गोरी ।
कै तुम चलो प्रतिष्ठा पूर्बक कै चलिहौ बरजोरी ॥ ७१ ॥

घनाक्षरी ।

शोख लखि असुर सरोख चढ़ी सिंहपीठ चोख चोख आयुध चपेटि मुगड काटती । गाल धरि फारती विदारती उदर दाबि, लोथन पै लादि लोथ रङ्गभूमि पाटती ॥ एक गहि मारती प्रचारती बिलोकि एक, धमकि धमाकि दै पछारि एक डांटती । गरजि परत जहां अम्बिका मुकुन्दलाल, तहां तहां गोल छिन्न भिन्न कै उचाटती ॥ ७२ ॥

प्रफुलित गात धरि अधर चबात दांत उद्धत बिरुद्ध जुद्ध क्रुद्ध मुख लाल है । बांह फरकीली अमि अन्तर उछाह भरे लरिबे की चाह चित चंचला सी चाल है ॥ भृकुटी बिकट लट बिखरि पिठाह परे लोचन बिशाल अवलोकन कराल है । लीन्हे करबाल कर कालिका मुकुन्दलाल, मारि कीन्ही चगड मुगड बाहनी बेहाल है ॥ ७३ ॥

हंसालदंडक ।

सिंह घहरात पबिपात इव गरजि कै, तरजि रिपु कटक

मधि प्रविशि धावै। देत चपटान भट चौंथि श्रुति घ्रान मुख, लेत हरि प्रान जेहि पकरि पावै॥ मारि कर पेट नख फारि श्रोनित पियत, एक तजि दूसरो धरि दबावै। विचलि गै सेन चहुँघा परावन परा, कौन अस धीर जो सँमुख आवै॥ ७४॥

दोवै।

घायल विकल धरातल विलपत, दानव अपर पराने।
का-पुरुषन उर परी धकककी, बिन मारे थहराने॥
अश्वारोही गज रथ धारी, उथलि पथलि छितराने।
देखि कटक दुरदशा व्यवस्था, चण्ड मुण्ड रिसियाने॥

बालावृत्त।

त्यागि संग्राम जो भागि जैहैं, शुम्भ कोपाग्नि सो मृत्यु पैहैं।
लागिहै दोष त्रैलोक्य माहीं, बीर ह्वै हारि गो नारि पाहीं॥७६॥

चौपैया।

अस कहि डर पाई दल लौटाई सजग चढ़ाई कीन्हा।
शस्त्रास्त्र सुधारत चले प्रचारत घेरि चहूँघा लीन्हा॥
उर आनि घमण्डै आयुध छण्डे सिंहहिं मारि चोटारे।
तकि तकि देवी तन चोपि मनहि मन अगिनित शर संचारे॥७७॥

सारछन्द।

दुर्गा देखि अदेवन साहस महा क्रोध उर छावा।
औरै रूप देहँ कछु औरै श्यामरङ्ग चढ़ि आवा॥

कज्जल सम पुनि बहुरि उर्धगति उलही छटा निराली ।
निकली भृकुटि ललाट देशतें मूर्ति भयानक काली ॥७८॥

छप्पय ।

छूटे केश कलाप पसरि एड़िन लौं छहरत ।
रसना चपल बिशाल निसरि मुख बाहर लहरत ॥
गहिरे लोचन तीनि चितैबो डर उपजावत ।
गर्जन घोर कठोर दशो दिशि शब्द पुरावत ॥
बिकट देहँ बिनु मास की, मुण्डमाल पहिरे गरे ।
जन मुकुन्द सुर रच्छनी, बाघम्बर कटि तट धरे ॥७९॥

दोहा ।

लिये पास खट्वाङ्ग कर, खप्पर खड्ग समेत ।
बिहँसि अम्ब अज्ञा दियो, दैत्य बिनाशन हेत ॥

घनाक्षरी ।

देत किलकारी भारी बेग से चली जु काली डोलै महिं लोलै शैल शृंग खसैं झोंक ते । चिग्घरत दिग्गजे बराह कूर्म कम्पमान महाभार शेष बार बार फनै रोकते ॥ बात झहरात हहरात घहरात नभ फूलन की बृष्टि होन लागी सुरलोक ते । बिड़रि चले हैं गज बाजि रथ जहां तहां प्यादे थहरात भहरात हांक भोंकते ॥ ८१ ॥

रथी सारथी तुरंग स्यन्दन चबान लागी कुंजर महावत समेत मुख मेलती । बड़े बड़े जोधे लरिबेको अभिमान जिन्है चक्कनसों

मारि पारि लातन कचेलती ॥ पकरि लेवांड़ीं भट जुगल उठाय धाय मुंड मुंड ठक्कर लड़ाय खल खेलती । मारि मारि खड्ग ते अनेकन संघारि रहो फेकि फेकि पाश लोथ लोथ में सकेलती ॥

जैकरी ।

सनमुख समर लरत जे आय । काली खौंखिआय तेहिं खाय ॥
गहि पद फेंकति गगन फिराय । केश पकरि छिति पटकति धाय ॥
हनि खट्वांग बिनाशति भूरि । बहुतन मींजि मिलावति धूरि ॥
भुज उपारि धरि फारति पेट । या विधि खेलति असुर-अखेट ॥

दोहा ।

एक घरी के बीच में, तिल प्रमान दल काटि ।
तिमिरहरतिजिमिरविप्रभा, गईताहिबिधचाटि ।

दोवै ।

काली बेग विलोकि उग्रता चंड मुंड खल कोपे ।
कहि सारथी हांकि रथ घोड़े समर चोपि मन रोपे ॥
संकुल शक्ति त्रिशूल चलावत इत उत ते दोउ दोपे ।
धनुष उठाय चढ़ाय प्रत्यंचा बरषि सिलीमुख तोपे ॥८६॥

रोला ।

चक्र निकाय निकारि मारि काली तन छापे ।
निज पुरुषत्व बिचारि तमकि अतिसय मन दापे ॥
चिपटे अङ्ग रथाङ्ग लसत इमि पटतर पावत ।
मनहुँ जलद के बीच बिभाकर किरिन बिभावत ॥ ८७ ॥

हंसाल दंडक ।

ता समय घोर रव जोर अट्टाट्ट हँसि अरुन दशनानि बक्रास्य वाली । क्रोध संजुक्त हंकारि खट्वाङ्ग धरि ।निन्दराति पौन गति स्वयं चाली ॥ चंड पहिं पहुंचि गहि केश महि खैंचि कर लच्छ ताकि ग्रीव पै अत्र घाली । काटि तत्काल धर ते कियो बिलग शिर बिबुध गन बदत जय मातु काली ॥ ८७ ॥

मरन लखि चगड को मुगड धावा गरजि दैव वस नीच नहीं मीचु चीन्ही । बकत अपबाद दुर्बाद आमर्षि मन निकट तुलि शांग की चोट कीन्ही ॥ छलक गइ चंचला सी तुरत निफल करि कूदि पुनि सद्य प्रतिबोध लीन्ही । मुंड को मुंड हनि खांडि सुर त्रातनी पास सों फांसि कसि झोंकि दीन्ही ॥ ५९ ॥

दोहा ।

अतिशय सेना दानवी, छन में गई बिलाय ।
कछु भट इत उत दुरि बचें, जहँ तहँ गये पराय ॥

घनाचरी

बिहँसति काली चंड मुंड माथ हाथ लीन्हे अम्बिका सों बोली आय भेंट निज लीजिये । समर के जग्य यह दोनो बीर महा पशु दीन्ही बलिदान ताहि अंगीकार कीजिये ॥ यासों अब यहो शत्रुनाशनी संतुष्ट होय मारि कै निशुम्भ शुम्भ आदि दैत्य छीजिये । धरनी को भार टारि इन्द्र पद को उबारि सुरन मुकुन्द मातु अभैदान दीजिये ॥ ६१ ॥

सरसी छन्द।

देखि कपाल उभै असुरन के मन्द मन्द मुसुकात।
चण्डी कहन लगी काली ते सुनो देवि मम बात॥
सुर दुखदाई चण्ड मुण्ड को जो तुम कीन्ह निपात।
चामुण्डा अस नाम हेतु तेहिं ह्वैहै जग विख्यात॥९३॥

सोरठा।

देवन वर्षि प्रसून, हर्षि बजावहिं दुन्दभी।
भयो प्रेम बढ़ि दून, दनुजन निधन बिचारि कै॥

सवैया।

ताहि समै प्रगटे तहँ शङ्कर भूषन व्याल कपाल की माला।
बाल कलानिधि भाल बिराजत पानि त्रिशूल धरे मृगछाला॥
कण्ठ हलाहल नील लसै बर देहँ विभूति सरूप विशाला।
लालमुकुन्द कृपाल बड़े प्रभु देवन पालक दीनदयाला॥९४॥

लीलावती छन्द।

बचन चण्डिका प्रति इमि भाषे कीजै मन सन्तोष हमारो।
बर प्रसाद विबुधन दुखदायक, समर भूमि असुरन मद गारो॥
मृत्यु अहै श्रीमती हाथ ते शुम्भ निशुम्भहिं शीघ्र सँघारो।
अधिक पाप बसुधा गरुआनी दुर्गा ताको भार उतारो॥९५॥

हंसालदण्डक।

श्रौन करि शिव गिरा कौशिकी देह ते कढ़ी अपराजिता धूम्रबरनी। शीस पै जटा बिस्तीर्न भीमाकृती प्रबल अभिलाष

दुष्कर्मकरनी ॥ सहस शत साथ श्रृङ्गालिनी प्रगटि तहँ करत धुनि दानवन दर्पदरनी । सेतु श्रुति पालिनी घालिनी · दुष्टकुल देवतन दुसह रिपु ताप-हरनी ॥ ९६ ॥

दोहा ।

सो देवी त्रिपुरारि सन, कीन्हो बचन प्रकास ।
हे भगवन् मम दूत ह्वै, जाहु शुम्भ के पास ॥

घनाक्षरी ।

उन दुराचारी पापधारी मतिमन्दन सों, मेरी कहनूति इमि कहिये बुझाइ कै। छाड़ि दिशाधीश शक्र आदि अधिकार पद, सहित समज ते बसैं पताल जाइ कै ॥ बल अहङ्कार के प्रभाव यदि मानैं नहीं, कृपा करि दीजिये वृत्तान्त तस आइ कै । दनु-जन मारि निज क्षुधित सियारिनिन, त्रिपित करोंगी भली भांति अघवाइ कै ॥ ९८ ॥

सोरठा ।

शिवहिं बनायो दूत, पठयो शुम्भ निशुम्भ पहँ ।
तब ते जग कहनूत, शिवदूती संज्ञा परयो ॥ ९९ ॥

सरसी छन्द ।

उत असुरेश्वर सुना श्रवन जब चण्डमुण्ड कर घात ।
दैत्य निकाय परे संजुग महि कर मीजत पछतात ॥
व्याकुल शोक दहत क्रोधानल समुझि असम्भव बात ।
रुदन करति असुरन की बामा बिलपत बीती रात ॥ १०० ॥

दोवै ।

प्रातहिं वृहद सभा करि बैठा दैत्यराज अभिमानी ।
अबला सबल जुद्ध विस्मयप्रद सचिवन्ह कहा बखानी ॥
चण्डमुण्ड भट महाबली-बध समुझि जरति रिसि छाती ।
अज्ञा तुरत दियो लरिबे की सुरविजयी उतपाती ॥१०१॥
नाम उदायुध सुभट छियासी बांके समर लड़ाके ।
कम्बुक चौरासी जितवैया बड़े बीर बसुधा के ॥
धूम्रबंस शत दैत्य हठीले सुरन पराजय दीन्हे ।
तें सब चढ़ि जावै देवी पहँ अमित सेन सँग लीन्हे ॥१०२॥
द्रुहित सुवन सह तनय कालका महासूर रनधीरा ।
कोटिवीर्य्य पंचास दानवा मौज शिरोमनि बीरा ॥
रक्तबीज जोधा प्रसिद्ध बर प्रभृति चमूप सिधावैं ।
करि संग्राम जीति देविन को धरि धरि बान्हि लिआवैं ॥

मत्तगयन्द छन्द ।

ताहि समै पहुँचे तहँ शङ्कर रूप विचित्र अनूपम चीन्हा ।
शुम्भनिशुम्भ शभासद मन्त्रिन स्वागत पूछि सुआसन दीन्हा ॥
औसर पाय कह्यो वृषभध्वज राजन बैर विचारि न कीन्हा ।
जो रचि पालै हरै जग स्वामिनि तासन लोह अकारथ लीन्हा ॥१०४॥
सत्य सुनो दनुजातपती तुह्मरी न चली अब एक उपाई ।
इन्द्र कुबेर मुकुन्द नृगादिक पावहिं गे अपनी ठकुराई ॥
जो विगरी सुधरैगी नहीं अजहूँ कछु चाहत जो पै भलाई ।
मानहु बात कही हमरी हठ छाड़ि पताल बसो तुम जाई ॥ १०५ ॥

रूपघनाक्षरी ।

सुनतहिं बानी शिव सानुज समेत शुम्भ, दहकि रिसागि उर लहकि उठी धधाय । बोला अनखाय अब रहिये चुपाय नाथ, जानी गई रावरी कहानी की अनोखी राय ॥ बहुत कहे पै आजु दूसरो जो होतो कोऊ, कारागार सेवतो न जातो फेरि पलटाय । आप पूजनीय कुलगौरव मुकुन्दलाल, आवै बनि सहतेहिं ताते न कछू बसाय ॥ १०६ ॥

कुंडलिया ।

हारे लड़ि लड़ि भूप सब चढ़ि चढ़ि समर समाज ।
दहले दिग्गज आदि दै कोल कूर्म अहिराज ॥
कोल कूर्म अहिराज जच्छ किन्नर विद्याधर ।
रवि शशि सुर गन्धर्ब बरुन मारुत बैश्वानर ॥
जम कुबेर पुरुहूत धनुर्द्धर अति भट भारे ।
ते सनमुख संग्राम हमारे लड़ि लड़ि हारे ॥ १०७ ॥
बाला की गनती कहा सहज सुभाव सभीत ।
अबलों प्रीति प्रतीत ते भई कठिन बिपरीत ॥
भई कठिन बिपरीत जीति अबलन रन लीन्हा ।
हम सब रहे निचिन्त तहां कछु ध्यान न दीन्हा ॥
रक्तबीज अब जात संग लै सैनिक-माला ।
सिंह सहाय समेत स्वर्ग जैहैं सब बाला ॥ १०८ ॥

सोरठा ।

सुनत दुष्ट की बात, हँसि गंगाधर अस कह्यो ।
जासु काल नियरात, तासु बुद्धि प्रथमहिं हरै ॥

मत्तगयन्द ।

ऐसहि गर्ब भयो महिषासुर नारि विचारि कै रार मचाई ।
सेनसमेत गयो खल खेलहि नाशत देवि न देर लगाई ॥
सो प्रगटी पुनि देव बिनै सुनि बूझहु शुम्भ घमंड बिहाई ।
त्यागि मृषा निज गाल बजाइबो सोचत क्यों न बचाव-उपाई ॥

घनाक्षरी ।

गुन करामात बल पौरुष प्रताप तेज तुमहुँ छपी न जैसी देवी-प्रभुताई है, । संत मूल थापनी उथापनी असन्त कुल एकही हुंकार धूम्रलोचन जराई है ॥ बड़े बरिवंड चंड मुडहू घमंड तोरि कटक समेत जमरावती पठाई है । रक्तवीज रक्त की पियासी सबवासी काली, ताहि हेतु मानो मुख-रसना बढ़ाई है ॥१११॥

सवैया ।

शुम्भ सरोषि कह्यो हर सों भल आप सुमेरहिं सो न दिखावत ।
बाक्य-बिलास अकास गहो सहसा मरु ऊपर भीत उठावत ॥
जानत कायर धौं हमकों यहि कारन धाक बढ़ाय भ्रमावत ।
कै वह देवि-सनेह-सने किधौं दूत बने कर छूत छोड़ावत ॥

मदिरा सवैया ।

जानत हौ दनुबंसज को हठि कालहु ते करि जंग लरैं ।
हेतु बिना रगरैं झगरैं रन पै चढ़ि पाव न पाछे धरैं ॥
धीर धनुर्द्धर बीर बड़े सुर हारि सदा सब काज करैं ।
सो बनिता डर सों डरपावत कौन सयानप मोहिं छरैं ॥

दोहा ।

कहहु जाइ वहि तियन तें, सावधान ह्वै जाहिं ।
रक्तबीज के समर में, है बचाव अब नाहिं ॥

हंसाल दंडक ।

गालबल अधिक बाचाल सुनि शुम्भ को जानि अभिमान कामारि माखे । पुरुष-कर मरन नहिं दीन्ह बरदान बिधि जानि मन समुझि पुनि प्रगट भाखे ॥ अरे मतिमन्द दृग अछत निपटन्धतैं आद्य शक्ती ते समरभिलाखे । द्वैक दिन बीच तव मीच भ्राता सहित बचन मम खूट गठिआय राखे ॥ ११५ ॥

सोरठा ।

अवशि अंगना हाथ, नाश तुम्हारो हइहै ।
अस कहि त्रिभुवननाथ, पास भगवती आयऊ ॥

लीलावती छन्द ।

शिव-मुख सुनि वृतान्त सुर-रिपु की परम क्रोध देवी उर छावा ।

मंत्रा-कर्ष प्रेरि आवाहन ब्रह्मादिक सुर शक्ति बुलावा ॥
जोगिनि अमित खबीश साकिनी बीरभद्र भैरो उपजावा।
ह्वै पुनि शकति कोटि नव दुर्गा निज स्वरूप बिस्तार बढ़ावा ॥

जैकरीछन्द।

बांये कन्ध सोह सारंग, परिकर बान्हे अछ्य निखंग।
चक्र गदादर पद्म सुहाथ, सन्दर मुकुट बिभूषित माथ ॥११८॥
कौस्तुभ मनिमाला गर माहिं, दिव्य बसन भूषन झलकाहि।
गरुड़-चढ़ी तन करि हरि साज आई विष्णु शकति रन काज ॥

तोटक वृत्त।

कर माल कमंडल अत्र लिये बर भाल प्रसस्त त्रिपुंड दिये।
चढ़ि हंस बिवान प्रभा लसई बिधि शकति उपस्थित आनि भई ॥
बरदा पर पानि त्रिशूल धरे अहि कंकन माल कपाल गरे।
विधु बाल कला सुखमा छहरै शिव शकति अनीक प्रबन्ध करै ॥

सवैया।

गाज गहे गजराज चढ़ी सुरराज सु शक्ति समाज बिराजै।
सांग लिये कर शक्ति षड़ानन रूर मयूर के ऊपर भ्राजै ॥
शक्ति बराह उछाह भरी चढ़ि आई तहां छिति कारन काजै।
भक्त सहाय मुकुन्द महा गति शक्ति नृसिंह भयानक गाजै ॥

दोवै।

बरुन कुबेर आदि सुर शक्तिन जुरीं सकल सहकारी।
रन-उत्कंठा होत कुलाहल भई भीर अति भारी ॥

बाहन बिविध घोर-रव गर्जत ध्वजा चिन्हजुत राजैं ।
गावंत कड़खा देव गगन ते बाद्य जुझाऊ बाजैं ॥ १२३ ॥

चामर ।

चंडिका रजाय पाय चोपि बाहनी चली ।
धूरि भूरि व्योम छाइ कम्पि मेदिनी हली ॥
बार बार भार के दबाव दिग्गजैं हलैं ।
लोल सैल सिंधु कोल कूर्म शेष उत्थलैं ॥१२४॥

छप्पय ।

निकर जम्बुकी संग धूम्रबरनी जगमाया ।
जोगिनिआदि जमात अद्भुती शक्ति निकाया ॥
खड्ग सेहथी हाथ लिये चामुंडा देवी ।
सैल-बालिका विश्वकारिनी बिवुधन सेवी ॥
चढ़ी सिंह पै कौशिकी, मन उत्साह बढ़ाय कै ।
पहुँचि शुम्भपुर घेरेऊ, घंटा शंख बजाय कै ॥१२५॥

दोहा ।

सुना सोर चहुँ ओर तें, अभिमानी दनुजेश ।
साजि सेन चतुरंगिनी, दियो जुद्ध-निर्देश ॥

काव्यछन्द ।

गहि कर चले गुलेल गुरुजखर जमधर भाला ।
पंचांगुल धनुबान सिपर करबाल कराला ॥

भिन्दिपाल तिरसूल शेल मूशल बर सांगी ।
मुद्गर पांस कुठार परिघ गोफन पटु ठांगी ॥१२७॥

जैकरीछन्द ।

कढ़ी आसुरी सैन अपार पैदल हय गज रथ असवार ।
भेरि दुन्दुभी बजत निशान बिरद-प्रशंसक करत बखान ॥
रंग बिरंग पताका केत राजत गाजत दैत्य सचेत ।
कायर डरत छुपावत गात सूरन रोम रोम फहरात ॥१२८॥
निजबल पौरुष मारत गाल पहुँचे समरभूमि ततकाल ।
दुहुँ दिसि एकहिं एक निहारि लागे करन भयंकर मारि ॥
इत उत होत महा ललकार सुनि न परत कछु अपन परार।
रन-अन्दोलन बिविध प्रकार उभय ओर चमकत हथियार ॥

किरीट सवैया ।

आयुध भांति अनेक प्रहारत मारत आनहिं आपु बचावत ।
एकन के प्रति एक लरैं बढ़ि वार करैं जित औसर पावत ॥
बैर बिरोध भरे इरषा लहि दांव दबैरि दबाय हठावत ।
जोगिनि-बृन्द परैं दल पै जहँ खेलहिं दैतन काटि खपावत ॥

हरिगीतिका ।

दानव समर मदमाति अगिनित अस्त्र सस्त्र चलावहीं ।
इत देवि शक्ति समूह त्रिन इव काटि काटि गिरावहीं ॥
तब चंडिका चढ़ि केशरी कोदंड सायक साजि कै ।
दल प्रबिशि हनि रिपुगन बिड़ारति घन सरीखे गाजि कै ॥

करि बहु उपाय शक्तिन प्रबल, असुर निकाय निपाततीं ।
खल कम्बुकादि विध्वंसि कै, बिबुधन कसक निकारती ॥

दोहा ।

महा मारि करि शक्तिगन, लीन्ह करोरिन्हप्रान
उसल्यो पग दानवन के जित तित लगे भगान ॥

सरसी छन्द ।

देखा रक्तबीज सेनागति पीड़ित चली पराय ।
करि दुर्नाद क्रोध ह्वै फेरच्यो पुनि सबहिन डरपाय ॥
मन उत्साह बढ़ाय भटन को दीन्ह्यो जुद्ध भिड़ाय ।
रथ चढ़ि आपु इन्द्र शक्ती पहँ भयो उपस्थित आय ॥
भूत समय करि बिबिध तपस्या लहि शंकर बरदान ।
जितने बूंद रुधिर धरनी-गत उतनै बपुष प्रमान ॥
सोई रूप रंग बय पौरुष गति प्रताप बरिबंड ।
ताते सठहिं मृत्युभय नाहीं गरजत समर प्रचंड ॥

लीलावतीछन्द ।

बज्राघात कीन्ह इन्द्रानी रथ सारथी तुरंग नसाने ।
रक्तबीज मुर्छित भा व्याकुल अंग अंग कटि कटि बिखराने ॥
श्रोनित धार गिरत धरनी-तल तुरतहि अमित असुर प्रगटाने ।
लागे लरन शुम्भकी जय कहि शक्तिन सों जहँ तहँ रन ठाने ॥

घनाचरी

अशनि पवारि बार बारहि उतारि शिर इन्द्रनी सकोपि रक्त

बजिन गिरावती। रुधिर परसि भू हजारन उपजि उठे बहुरि निपातिबे को आयुध चलावती॥ चक्र गहे बैष्णवी महेश्वरी त्रिशूल लिये, काटि काटि लाखन धरातल लोटारती। बर के प्रसाद पुनि कोटिन नवीन भये मारि मारि देविन बहोरि बिवसावती॥

दोहा।

कौमारी निज शकति लै, अपर देवि गन संग।
रक्तबीज दल बृद्ध लखि, कराति घोर तर जंग॥

लीलावती छन्द।

परत छतज ज्यों ज्यों छिति ऊपर त्यों त्यों रक्तज ह्वै अधिकाने।
मारत आड़त तमकि प्रचारत नेकु न हारत अधम उधाने॥
मरत एक तहँ लरत सहस उठि भरि घमंड अतिसय भरुहाने।
पग राखिबे को ठौर न पैयत जयआशा तजि बिबुध सकाने॥

हंसालदण्डक।

मोरि मुख बीरभद्रादि गन धीरि तजि छोरि रन जोगिने ह्याव त्यागा। संकिनी डाकिनी बिचालि पीछे हटी जुद्ध इच्छा हिये निसरि भागी॥ दिग दुरद चँपे अहिकोल कच्छप कँपे बोझ भरि रसा थहरान लागी। रेनु उड़ि उमड़ि आकाश मारग चली पौन गति थकित जात जागी॥ १४३॥

रूपमाला छन्द।

दिबिष व्याकुल देखि रन कृत त्रसित बचन पुकारि।

अधिष्ठात्री चंडिके यहि दीन्ह बर त्रिपुरारि ॥
ताहि कारन रूप अगिनित उपजि बाढ़त जाय ।
उर्बि पै नहि परहि शोनित करहु तौन उपाय ॥ १४४ ॥

गीतिछन्द ।

सुनि तातपर्य्य सहेत देवन प्रार्थना जुत बैन ।
अस समुझि भेद महाशया के भये लाले नैन ॥
भुज दंड पुष्ट प्रचंड फरकत बिकट भृगुटी भंग ।
मन चाह अधिक उछाह हृदये रोम प्रफुलित अंग ॥१४५॥

घनाक्षरी ।

काली को बुलाय देवि चंडिका कहन लागी सत्वर चामुंडे बिकटानन बढ़ाइये । फेंकि फेंकि पाश ते बझाय रक्तबीजन को दाबि दाबि दांतन समूचा लीलि जाइये ॥ शोनित-प्रबाह भूमि परन न पावै नहीं कटै न सरीर तस आयुध चलाइये । सुर दु-खदाई खल एक से अनेक भये कीजिये प्रबेस जानि गहरु लगाइये ॥ १४६ ॥

दोहा ।

आगे आगे चलति मैं, मारत असुर अपार ।
लोथि गिरन पावै नहीं, धरि धरि करहु अहार ॥

सोरठा ।

पियहु रुधिर छत चाटि, रसना परम पसारिकै ।
आगातिन कहँ डांटि, हरहु प्रान उबरैं नहीं ॥

शुभग दंडक ।

बेष बिकराल उत्ताल काली चली खड्ग खट्वाङ्ग लै असुर संघारती ।शक्ति चतुराननी घूमि चहुँ ओर छिरिकि जल दानवन तेज अपहारती ॥ तथा त्रैशूल गहि कोपि माहेश्वरी बैष्णवी चोपि निज चक्रते मारती । कुन्त कौ मारि धरि सची पविपात करि सहस शत दनुज हरि प्रान महिं पारती ॥ १४७ ॥

छप्पय ।

बाराही दशनाग्र तुंड ते हनि बिनसावै ।
प्रखरै नखर बिदारि नारसिंही धरि खावै ॥
लिये तिब्र कर शूल धूम्रबरनी रन धावै ।
हति कदम्ब गज बाजि छुधित स्यारिन अघवावै ॥

घनाक्षरी ।

दुष्ट दल घालिबे को कौशिकी नियोग पाय, धाय चली पैज-करि काली सुर रच्छनी । असुर असंख्य में निसंक पैठी हंक देत बेष बिकराल तैसी मूरति बिलच्छनी ॥ भच्छन लगी है सो तत-च्छन प्रयास विनु, नाशै रक्तबीजन को समर बिचच्छनी । लाखन के खातहू न नेकहू अघात पेट, उड़ै दिशि चारो मानो मृत्यु है सपच्छनी ॥ १४६ ॥

बिनु फर शिलीमुख चंडिका चलावै चोपि, शतक सँघारि पुनि सहस पछेरती । सारदूल बाहन उछाहन कुदाय रही, बिमुख परात ताको पाश फेंकि फेरती ॥ मुष्टिकन मारि तिन्है शक्तिन

पछारैं धरि, चरन दबाय काय भूतल दरेरती। शोनित रतीहू भर गिरन न पावै कहूं, बीचहीं उठाय धाय काली मुख गेरती ॥

दोहा।

रक्तबीज प्रति बिम्ब सब, छन में भी संघार।
जैसे बुल्ले बारि के, बिनसत लगे न बार ॥

दोवै।

देखि दनुज प्रति मूर्ति सिरानी गरजि क्रोधबस धायो।
इत उत लरि शक्तिन बिचलावत चंडी सनमुख आयो ॥
भाषत कटुक काल को मारा तकि भुज गदा चलायो।
सुमन सरिस सो लग्यो भगवतिहिं तनिक न घाव जनायो ॥

हंसालदंडक।

असुर निशंकता निरखि सिंहासिनीं, सुरन बरियार बैरी बिचारी।
दीन्ह हंकार दारुन भयानक गिरा, तेज गति लै हुमसि मारी ॥
पिलिचि गई उदर मैं निसरि आंती परी, तुरत काली रुधिर चाटि डारी।
कुधर इव परा भहराय बिनुप्रान ह्वै, धमकते डगमगी भूमिसारी ॥

घनाक्षरी।

जुझि परयो जुद्ध छेत्र ह्वै निरक्त रक्तबीज देव बिजै संख भेरि दुन्दुभी बजावहीं। देविन प्रभाव पैज प्रबल प्रताप हेरि, कोटि धन्यबाद देत दास्यता जनावहीं ॥ बाढेउ प्रतीत शुम्भऊ निशुम्भ नष्टिवे की हर्षि कल्प बृक्ष के प्रसून झरि लावहीं। जै जै सर्बतत्व मातु चंडिका मुकुन्दलाल बार बार बिरद बखानि जस गावहीं ॥ १५४ ॥

दोवै ।

समर बृतान्त सुना पुरबासिन दानव लोग लुगाई ।
ब्याकुल खेद बिबस उर पीटत रुदन करत बिलखाई ॥
शुम्भ निशुम्भ भगो असहन दुख शोचत रैन बिहाई ।
होत प्रभात सेन चतुरंगिनि करि प्रबंध सजवाई ॥ १५५ ॥

घनाक्षरी ।

पाय शुम्भ आयसु निशुम्भ बीर नाय सीस, क्रोधावेश धारी भारी मानो रौद्र रस है । उग्र मुख भृकुटी बिकट अरुनारे नैन, सून्नत घमंड ऐंड अंग सरबस है ॥ छाजै तन त्रान ढाल कवच सनाह टोप, आयुध अनेक औ बिशाल तरकस है । स्यन्दन तुरंग संग बारन मुकुन्दलाल, पैदल अपारन की भीर कसमस है ॥

दोवै ।

दानव बड़े बड़े लड़वैया देविन सनमुख घाये ।
फरकत अधर दसन दंसि पीसत तरल तमकि चढ़ि आये ॥
अरुझे उमगि एक एकन प्रति अत्र समूह चलावैं ।
इत सुर शक्तिन समटि सजग ह्वै सहजहिं मारि गिरावैं ॥

सरसीछन्द ।

पहुचि निशुम्भ जुरच्यो चंडी पहं भाषत बचन कठोर ।
सावधान ह्वै लरहु भामिनी समर सामना मोर ॥
सिंह समेत हटाय खेत सों आजु निपातहुं तोहि ।
असुरन बैर लेत नहिं जबलों होत न धीरज मोहि ॥

सरसी छन्द ।

कौतुक कला जानि रन परिहैं दैहौं साथ पुजाय ।
बचिहैं प्रान प्रतिज्ञा त्यागे कहे देत गोहराय ॥
अजहूँ कहा मानि मम सुन्दरि बरहु शुम्भ नृप साथ ।
निर्भय बनहु राजगृह स्वामिनि या विधि होहु सनाथ ॥१५९॥

दोहा ।

दुष्ट गिरा सुनि चण्डिका, बिहँसि अनादर कीन्ह ।
सहज सुभाव अशङ्कता, प्रति उत्तर इमि दीन्ह ॥

मदिरा सवैया ।

रिष्ट सरिष्ट बरिष्ट बड़े विधि सृष्टि अभिष्ट कहावत हौ ।
इष्ट अनिष्ट जथेष्ट प्रथा तजि मूर्ख से बात चलावत हौ ॥
जुद्ध समै रिपु पै कृपया निज कादरता दरसावत हौ ।
सूर सपूत अहो रन के डरि नाहक नाम धरावत हौ ॥१६१॥

मत्तगयन्द ।

हौं तो सुनी बड़वारि बड़ी प्रभुता तुह्मरी तिहुँ लोकन छाई ।
जुद्ध क्रिया करतूति कला पुरुषारथ पोरुष देखन आई ॥
जो भभरै मन तौ फिरि कै निज भ्रातहिं जाइ कहो समुझाई ।
छाड़ि पुरन्दर की पदवी ततकाल पतालहिं जाहु पराई ॥१६२॥

दोवै ।

दुर्गा बैन निशुम्भ श्रवन करि क्रोधानल उर दहेऊ ।
काढ़ि त्रोन ते सफल शिलीमुख तानि धनुष दिढ़ गहेऊ ॥

छाड़ेसि कड़ाकि तड़ाकि बारिद इव हिय अहमेव बढ़ायो ।
इत निज बान चलाय भगवती उलटहिं फेरि पठायो ॥१६३॥

काव्य छन्द ।

डाह कसक उर राखि माखि शर बरसन लागा ।
छुकत जात सब वार तदपि सकुचत न अभागा ॥
गहि कर शक्ति कराल ताकि लचकाय पवारी ।
चक्र छाड़ि जगदम्ब काटि अधबीचहिं डारी ॥ १६४ ॥

दोहा ।

पुनि सकोपि तिरशूल लै, डारेसि दम्भ बढ़ाय ।
पकरि मुष्टिते चंडिका, दीन्हो भूमि गिराय ॥

गीता छन्द ।

देखि अति इन्द्रारि लागर देबि हृदय हुलासि कै ।
कारमुक टंकोरि रोदा बिशिष बिषमें निकासि कै ॥
छोड़ि तकि हय सारथी हति रथ पताका तोरेऊ ।
परा व्याकुल मुर्छि खल महि निसित शर उर फोरेऊ ॥

छन्द रोला ।

अर्ध घरी पै जागि गदा गहि पैदल धावा ।
मुख बाये विकराल चंडिका सन्मुख आवा ॥
कीन्हेसि गदा-प्रहार मातु निज शूल चलायो ।
उभय खंड करि ताहि अवनितल तुरत गिरायो ॥ १६७ ॥

सरसी छन्द।

अष्ट चन्द्रमा जटित ढाल लै अरु तिच्छन तरवार।
झपटि चला पुनि महा क्रोध करि मारेसि सिंह लिलार॥
ओछी चोट परी मस्तक पै चिल्हकि गयो पछिलाय।
पीड़ित देखि कछुक निज बाहन दुर्गा रोष बढ़ाय॥१९८॥

हंसालदंडक।

चाप गुन तानि सन्धानि नाराच पटु चला लहरात ठहनात फोका। पछलि इन्द्रारि गो पैतरा बदलि कै ढाल की ओट दै शीघ्र रोका॥ बजड़ि कै चोट फटि शब्द तड़कत भयो गिरयो चन्द्राष्ट कटि परत झोका। झनाकि करबाल कइ टूक भइ टूटि कै जयति मा सुर बदत देखि मोका॥ १९९॥

दोहा।

गहि परशा धावा प्रबल, शठ निशुम्भ अनखाय
तजि देवी दिव्यास्त्र को, दीन्हो काटि खसाय॥

सोरठा।

भयो पर्वताकार, दश हजार भुज धारि तब।
कियो कठिन चिग्घार, डगमगात दबि मेदिनी॥

जैकरीछन्द।

धावत रन मण्डल चहुँओर, काली सों करि जुद्ध कठोर।
लड़ि शक्तिन ते बिबिध उपाय, जोगिनि गन दीन्हेसि बिचलाय॥

बहुरि चण्डिका सन बिरुझान, छाड़ेसि बान अनेक बिधान ।
अगिनित चक्र चलायसि कोपि, सिंह सहित चण्डी तनु तोपि ॥

हरिगीतिका ।

सुनि बिबुध-हाहाकार बानी मृड़ा अरुन बिलोचनी ।
सजि सहस तीर प्रचण्ड छंड्यो दैत्यदर्पबिमोचनी ॥
करि चुर्न चुर्न रथाङ्ग सब महि डारि धूरि मिलायऊ ।
कोदण्ड बान बिभञ्जि रिपु को तून काटि गिरायऊ ॥१७४॥

सार छन्द ।

शुक्र-शिष्य गहि हाथ सैहथी देविहिं साधि पवारचो ।
खड्गधार समुहाय भगवती खण्ड खण्ड करि डारचो ॥
तत्पश्चात कोपि श्रीस्वामिनि आपन शूल चलायो ।
बक्षस्थल फटि शुम्भानुज को प्रबल असुर प्रगटायो ॥१७५॥

छप्पय ।

महा बिक्रमी बीर भयङ्कर समर-जुझारा ।
असित शैल सम देह मनहुँ कल्मष-औतारा ॥
प्रलय तोयधर नाद करत अतिसय गर्वायो ।
दनुजबैरिनी नारि खड़ी रहु अस कहि धायो ॥
हठि हनेसि मुष्टिका कुलिश इव उछरि गजारि बचायऊ ।
पञ्जा उठाय पुनि छापि तेहि पकरि दशन झहरायऊ ॥१७६॥

दोहा ।

तुरत कौशिकी काढ़ि असि, काटि लीन्ह खल शीस ।
भूधर सेधर महि परचो, लाग्यो धमक फनीस ॥

हरिगीतिका छन्द ।

दश सहस शर सजि चण्डिका तजि व्याल से फुंकरत चले ।
लागे निशुम्भ नवीन भुज सब काटि डारे भूतले ॥
उर बेधि छेदत भये बाहर रुधिर की धारा कढ़ी ।
भा बिकल शत्रु विलोकि देवी सिंह पै आगे बढ़ी ॥ १७८ ॥
गहि चिकुर कसि निहुराय कन्धर चन्द्रहास उबाहि कै ।
हनि झटिति मुण्ड उतारि धर ते फेंकि दीन्ह उलाहि कै ॥
चहुँओर घुमरि कबन्ध नाचत खण्ड भूमि धरायऊ ।
जय अम्बिका कहि निर्जरागन जीति शङ्ख बजायऊ ॥१७९॥

लीलावती छन्द ।

सिंहवाहिनी उतरि सिंह ते पीठि ठोंकि दीन्ही सिसिकारी ।
गयो डहाकत रिपुदल भीतर धरि धरि दनुजन खात पछारी ॥
काली पहटि पहटि भट भक्षति क्षुधित न नेकहु पेट अघाती ।
शिवदूतिका समेत जम्बुकिन चोंथि चोंथि दुष्टन पल खाती ॥१८०॥

मत्तगयन्द ।

शक्तिन घालि निजायुध तिच्छन संजुग कोटिन दैत्य संघारे ।
घायल बीर परे तलफैं महि, कायर लै तन प्रान सिधारे ॥
नाचति जोगिनि जोम जनावति देव बजावत जीत नगारे ।
लाल मुकुन्द सराहि कहै गिरिजा जग ख्यात प्रताप तिहारे ॥

मदिरा बृत्त ।

बन्धु बृतान्त सुना असुरेश्वर व्यग्र बिलाप कलाप करै ।
लोक तिहू ज्यहिं के लरि सन्मुख को अस बीर जो धीर धरै ॥

हारि हटे अदितीसुत बासव, सो किमि कामिनि हाथ मरै।
लाल मुकुन्द अहो बिधना-गति गूढ़ रहस्य न जानि परै॥

दोहा।

बहुबिधिअनुजप्रतापगुन,कहिरोवतबिलखाय।
बहुरि धीर धरि देत मति, निज दलपति बुलवाय॥

घनाक्षरी

मारू राग तुरही नगारे पै जुझाऊ चोप, दुन्दुभी नफेरि भेरि बाजि बजवाइये। स्यन्दन तुरंग गज पैदल सिपाह जेते, सेन चतुरंगिनी तुरन्त सजवाइये॥ भिन्न भिन्न जुत्थ के अनेक बाहनी बनाय, असित अधीरन बुझाय लजवाइये। समर चढ़े पै फेरि परै न पछारी पग, कादर जो होय पहिलेही भजवाइये॥

सोरठा।

कठिन लड़ाकी नारि, हौंहू चढ़ि रन देखिहौं।
आजु सबहिं संघारि, दैहौं भ्रातवियोग-फल॥

मादिरा बृत्त।

आयसु देत न देर लगी सजि दैत्य तयार भये छन में।
एकहि एक बढ़ावत साहस बैर घमण्ड भरे मन में॥
आयुध बान्हि निषङ्ग कसे कटि बर्म सनाह धरे तन में।
गाल चलावत सोर मचावत प्रेरित काल चले रन में॥१८६॥

रूपमाला छन्द।

अति उतङ्ग विशाल रथ चढ़ि बाजि चारि जुताय।
साजि पट बहु ध्वज पताका अस्त्र शस्त्र धराय॥
चला आतुर शुम्भ क्रोधित दल समग्र चलाय।
होन लागे दुखद असगुन असुभ बरनि न जाय॥ १८७॥

हंसालदण्डक।

निकर दनुजात खल पहुँचि संग्राम थल, तमकि गल बल करत कटुक बानी। इतै सब शक्तियन देखि रिपु प्रबल दल, गराजि इक एक प्रति समर ठानी॥ दानवाधीश नियराय कौशिकी पहँ, आठहू पानि धनुबान तानी। बुन्द सम सफल नाराच बरसन लगा, हृदै करि डाह मन रोष आनी॥ १८८॥

दोहा।

सहस तीर जब छाड़ेऊ, दनुज राज गर्बाय।
अगिन बान तजि चण्डिका, कीन्ही छार जराय॥

मत्तगयन्द।

आतुर शार्ङ्ग गहा पुनि भीषन मारेसि साधि हिये झुँझलाई।
आवत देखि हुतारशन के सम रोकि गदा जगदम्ब बचाई॥
निष्फल वार गयो लखि सो खल कीन्हेसि नाद महा घननाई।
कम्पित तीनहुँ लोक सशङ्कित मातु मुकुन्द गजारि बढ़ाई॥ १९०॥

सोरठा ।

कठिन तिव्र त्रैशूल, हनि शुम्भहिं घायल कियो।
त्रिदशन बरषत फूल, देविप्रताप प्रशंसि कै ॥

छप्पय ।

ऐन्द्री वज्र प्रहारि बैष्णावी चक्र चलायो ।
माहेश्वरी त्रिशूल मारि असुरन बिचलायो ॥
शक्ति जज्ञ बाराह नारसिंही कौमारी ।
चामुण्डा शिवदूति प्रविसि रिपुदल संघारी ॥
अपर शक्ति गन जोगिनिन रथ गज बाजि नशाइ कै ।
घेरि लयो पुनि शुम्भ कहँ चहुँदिसि व्यूह बनाइ कै ॥१९२॥

हंसालदंडक ।

सह्मरि धरि धीर दनुजाधिपति निरखि यों मण्डलाकार शक्तियन घेरा । सारथिहिं कहेसि रथ चक्रगति हांकु अब बाग गहि अश्व सो तुरत फेरा ॥ आपु करि दाप धरि चाप आकर्षि गुन अनगिनित बान चहुँओर गेरा । चक्र त्रैशूल बर शैल शांगी बिपुल मारि गन जोगिनिन दल पछेरा ॥ १९३ ॥

घनाक्षरी ।

निज दल बिचल हिमाञ्चलसुता विलोकि, महाधुनि बार बार सङ्ख लै बजायऊ । धनुष टकोरि करि कठिन कठोर शब्द, घण्टे की अवाज दशहू दिशान छायऊ ॥ गरज्यो बहोरि हरि आनन

पसारि घोर, काली भुजदण्ड मारि बसुधा हलायऊ । कीन्ही तद-नन्तर भयङ्कर अट्टाट हास, जननी मुकुन्द धूम्रवरनी हहायऊ ॥

दोहा ।

धनि धनि करत सराहना, देव गगन के बीच ।
जानि परी अब शुम्भकी, पहुँची मृत्यु नगीच ॥

दोवै ।

सिंह धवाय पहुँचि बैरी पहँ बोली गरजि भवानी ।
अरे दुरात्मन ठहरु घारिक अब जीवन-आश सिरानी ॥
देवन जज्ञ भाग पावहिंगे इन्द्र राज निज करिहैं ।
भानु कृशांसु समीर कलानिधि सुख पूर्वक अनुसरिहैं ॥

सरसी छन्द ।

कह्यो शुम्भ दुर्गे निज बलको, कहा करति अहमत्व ।
शक्तिन बल अधार लरती हौ, यामें कौन महत्व ॥
जो तुम शाका चहति जगत में, करहु इकाकी मार ।
हमते समर ठानि जो उबरहु, तो जस चलै अपार ॥

घनाक्षरी ।

सुनि रिपु बानी सुरसेब्या महरानी बोली, तैं तो मतिमन्द अन्ध निपट गवांरो है । जैसे बारि बीच रजनीकर मरीचिका ज्यौं, चित्रभानु ज्वाला मित्र आतप न न्यारो है ॥ तैसे इस जगत के बीच मैं अकेलहीं हूँ, देखत जो शक्ति सब बिभव हमारो है ।

काहू न अभिन्न मोते भाषत मुकुन्द मातु, समर की शोभा लागि कौतुक पसारो है ॥ १९८ ॥

सोरठा।

निजबल त्वहि अहमेव, एका एकी लरन को ।
पूर्न करब सो टेव, शक्तिन अबहिँ प्रलोप करि ॥

सरसी छन्द ।

ब्रह्माणी इत्यादि शक्ति सब भईं चंडिकहिं लीन ।
कोटिन मुख जिमि ज्वाल एक ह्वै उपमा लही नवीन ॥
सकुत प्रदीसमान मृगपति पै घन समान रव कीन ।
कह्यो शुम्भ ते करसि जुद्ध अब पापातमा मलीन ॥२००॥

लीलावती ।

क्रोधित दनुज चाप शर साजि साजि बहुत प्रकार चलावन लागा।
चन्द्राकार अपार शिलीमुख कितने चल भयंकर नागा ॥
इत श्री स्वामिनि एक एक पै द्वै द्वै मंत्रित अस्त्र पवारयो ।
कीन्ह बिनष्ट रोकि गति बीचहिं अरि घमंड मद कठिन उतारयो ॥

हंसालदंडक ।

करत संग्राम इत चंडिका शुम्भ उत, अमित शस्त्रास्त्र गहि तमकि डारैं । लरत करि घात वचि रहत आघात तें, पाय निज दाव इक एक मारैं ॥ मुरत पछिलाय बढ़ि जुरत समुहाय पुनि, तानि

धनुवान बदि बदि प्रचारैं । क्रीट तनत्रान कटि कटि परत खनकि महि, तदपि रनधीर नहिं चित्त हारैं ॥ २०२ ॥

सरसी छन्द ।

लखि रुख शारदूल चंडी को, छौंकि परत जेहि ठाम ।
तित दानवाधीश रथवाहक, फेरत अश्व लगाम ॥
जोजन एक प्रयन्त जंग महि, घुमरि लरत चहुँ ओर ।
निर्जरबृन्द गगन मंडल ते, देखत जुद्ध कठोर ॥२०३॥

दोवै ।

चलत रसा दलमलत दिशाकरि, व्यालराट फन नयऊ ।
दसन बराह पृष्ठ कच्छप के, दरकि दरकि दरि गयऊ ॥
फलकत गिरि हलकत सागर जल, व्योम रेनु उड़ि छाई ।
अति भय भीत लोक तिहुँ व्याकुल, समर वरनि नहिं जाई ॥२०४॥

सोरठा ।

दैत्येश्वर हङ्कारि, चाप चढ़ाय टकोरि गुन ।
शत सायक संचारि, देविहिं आच्छादित कियो ॥

मत्तगयन्द ।

कोपि शिवा शर साजि धनञ्जय डारि सुरारि नराच जरायो ।
काटि दियो पुनि तासु शरासन तीर समेत तुनीर गिरायो ॥
तिच्छन चक्र त्रिशूल प्रहारन स्यन्दन सूत तुरङ्ग नशायो ।
मातु मुकुन्द उछाह भरी उर मारि धरातल शत्रु सुतायो ॥२०६॥

हरिगीतिका ।

रहि छनिक मूर्छा ग्रसित पुनि शठ जागि हठि शक्ती लियो ।
चाहत चलावन जबहिं तब तक शूल चलि खण्डित कियो ॥
शतचन्द्र ढाल कृपान कर गहि क्रोधि मन धावत भयो ।
इत सफल सायक तज्यो देवी निफलता उद्यम गयो ॥२०७॥

गीता छन्द ।

लै प्रवर अधिक बिशाल मुद्गर चला शुम्भ बहोरि ।
सन्धानि विशिष कठोर स्वामिनि डारेऊ महि तोरि ॥
तब शीघ्रता करि कूदि सुररिपु पहुँचि निकट रिसाय ।
मारेसि उर स्थल ताकि देविहिं मुष्टिका अनखाय ॥२०८॥

सोरठा ।

जानि पर्‌यो नहि घाव, तदपि ढिठाई देखि कै ।
करि दुर्गा मन चाव, उतरि सिंह पैदल भई ॥
गई शत्रु पहँ धाय, तिरछे कर करि मारऊ ।
परा भूमि भहराय सह्मारि प्रबल सहसा उठा ॥

सवैया ।

गहि देविहिं धाय अकाश गयो सुर स्वामिनहू तहँ रोष बढ़ाई ।
उड़ि लागी लड़ै सो अधार बिना उत शुम्भहुं बाहुं उठाय भिड़ाई ॥
कवि लाल मुकुन्द कहा बरनै वह घोर भयानकता समराई ।
सुर सिद्ध मुनिन्द निहारि डरे उपजी हृदये अति व्याकुलताई ॥

हंसालदंडक ।

पकरि विश्वेश्वरी रिपुहिं झकझोरि तन, उर्धगति गेंद तद्वत उछारी । गिरत पुनि रोकि पहुँओर चक्कर दियो, उलटि अधमुंड करि भूमि डारी ॥ संगहीं गराजि कै कूदि ऊपर परी, महा अभिमान बल मद उतारी । बिकल दुष्टातमा प्रान चंचल भये, नाचित दृग पूतरी पलक हारी ॥ २१२ ॥

दोहा ।

सम्हरि धीर धरि उठिचल्यो, अहंकार हियराखि।
तमकि मुष्टिका तानेऊ, गराजि घोर रव माखि ॥

रूपमाला ।

उलटि धारा बहत सरिता, दिनहिं उल्कापात ।
जलद बरषत रक्त पल रज चलत प्रखर प्रबात ॥
होत असगुन अति उपद्रव ग्रहन रबि भूडोल ।
स्वान स्यार उलूक रासभ भयप्रदायक बोल ॥ २१४ ॥
बिबिध अनुभव देखि देवी कीन्ह हृदय विचार ।
बहुत खेलेसि शुम्भ रन अब हरहुँ हनि महि-मार ॥
शूल लै बक्षस्थलै तकि कियो कठिन अघात ।
प्रान-गत भा असुरनायक तुरत महि महरात ॥ २१५ ॥

हरिगीतिका ।

मरि गिरत गरजा घोर रव करि धमक तें धरनी हली ।
खरकत धराधर टुटत तरुवर झोंक ते आंधी चली ॥

अवलोकि वैरीनिधन त्रिभुवन देविपैज प्रशंसहीं ।
जय जननि जन पंकज प्रभाकर अनल वन-दनुवंसहीं ॥

दोहा ।

जथातत्थ संसार भो, मिट्यो सकल उतपात ।
निर्मलव्योमबिमानजुत, बहतत्रिविधिवरबात ॥

सोरठा ।

परत पुष्प वौंछार, बजत भेरि दर दुन्दुभी ।
बरनति सुजस अपार, नाचति गावति अप्सरा ॥

मंदिरावृत्त ।

शुम्भ निशुम्भ दुनी-दुखदायक, सेन समूह समेत हये ।
जे कछु दैत्य बचे रन ते भजि, जीवन लोभ सभीत भये ॥
छाड़ि चले सुख इन्द्रहु दुर्लभ लै बनितान पताल गये ।
मातु मुकुन्द विराजि रहीं जहँ देव बिनै धुनि आनि ठये ॥२१९॥

नारायणीस्तुति ।

हंसालदण्डक ।

जयति नित्या अतुल-तेज भव तम दमन लोक तिहुँ ख्यात तव जस अपारम् । विभव अनुपम अगम चरित आश्चर्य्ययुत, असुर क्षयकार प्राक्रम उदारम् ॥ महा सामर्थ सरनार्थि बाधा शमन प्रवल परताप रिपु गर्व गारम् । विबुध कुल कार्य निरुपाधि सिद्धिप्रदा, धन्य नारायणी नमस्कारम् ॥ २२० ॥

गगन गत आपु हैं जीव अवकाश हित, धरनि है धरचो

संसार भारम् । सलिल में प्राप्त जग सिर्जना करति हो, अनिल मै परस संचार सारम् ॥ कान्ति दै दिप्त गुन तप्त है वन्हिगत, पञ्च भूतात्म मैं निर्विकारम् । सुरन पै सदा सन्तुष्ट सु मुकुन्द मा, पाहि नारायणी नमस्कारम् ॥ २२१ ॥

आपु प्रकृती परा सुभग आकृत बिमल पूर्ण ब्रह्माण्ड रूपा अधारम् । आदि मध्यान्त तव निगमहूँ विदित नाहिं नाम दिढ़ पोत भवसिन्धुतारम् ॥ काम धर्मार्थ अपवर्ग कारन शुभा दास कल्यानदा दुःखहारम् । सर्व विद्या परम शक्ति महिमा अमित तुष्टि नारायणी नमस्कारम् ॥ २२२ ॥

त्रैगुनावृत्ति संजुक्त महदादि गुन, बहुगुना रूप सृष्टि पसारम् । ज्योति आखण्ड वर शक्ति विधि विष्णु शिव, आपु आधान सर्बाधिकारम् ॥ मन्त्र आराधना करहिं जो शाक्त जन सिद्ध मन कामना प्रदातारम् । देहु निज भक्ति बरदान अखिलातिमके गौरि नारायणी नमस्कारम् ॥ २२३ ॥

घनाक्षरी ।

सती पतिव्रता बहु बनिता भई हैं जग ह्वैहैं पुनि आगे अब जेती विद्यमान हैं । रावरेई अंश सुप्रकाश को प्रभाव यह सब प्राणिया में आपही विराजमान हैं ॥ कला पला घरी दिन पच्छ मास वर्ष जग कल्पहू प्रयन्त आप अन्तक महान हैं । भीतरहु बाहर निरन्तर मुकुन्द मातु आपही के हाथ आदि मध्य अवसान हैं ॥

रावरे अधार ते विरंचि विष्णु भूतनाथ, विस्व विषयन रचि पालत हरत हैं । पावक समार औषधीश भानु बारिनाथ, रावरे

प्रसाद जग कारज करत हैं ॥ तापस महर्षि सिद्ध जोगिन मुनिन्द वृन्द, सुन्दर पदारविन्द ध्यान मै धरत हैं । छाड़ि सब आश तव सेवक मुकुन्द मातु निडर निरोग रिपुहीन विचरत हैं ॥ २२५ ॥

सुकृतिन भौन लच्छमी ह्वै देति नाना सुख, पापिन के धाम में बिपत्ति ह्वै सतावती । स्वच्छ चित्त वृत्तिन की बुद्धि ह्वै विलासि रही, सत्यव्रत धारिन की श्रद्धा ह्वै प्रभावती ॥ जीवन को मोहित करति ह्वै अविद्यारूप, लाज ह्वै कुलीननै प्रतिष्ठता बढ़ावती । व्यापि सचराचर मैं स्वामिनी मुकुन्द लाल, माया ह्वै अनेक भाव पेखना देखावती ॥ २२६ ॥

तुमहीं ब्रह्माणी जोति शोभित मराल चढ़ी, मन्त्र जल फैंकि फैंकि शुम्भसेन मोहेऊ । बैल पै विराजि अहि चन्द्रमा त्रिशूल धारि, काटि काटि दानवन मुण्डमाल पोहेऊ ॥ कार्त्तिकेय शक्ति महाशक्ति ल मयूरारूढ़, दुष्टन संघारि भूमि रक्तन ते बोहेऊ । चक्र गदा हाथ मातु वैष्णवी मुकुन्दलाल, सुरन हितार्थ हेतु अ-सुर बिछोहेऊ ॥ २२७ ॥

तुमहीं बाराही नारसिंही तुहीं जैष्णवी ह्वै, आयुध प्रहारि सुर द्रोहिन नशायऊ । धारि शिवदूती रूप दुष्टन घमण्ड तोरयो हति रक्तबीजन करोरिन खसायऊ ॥ कालहूँ को काल महाकाली ह्वै कराल रूप, काल गाल चण्डमुण्ड सदल फसायऊ । मारि कै निशुम्भ शुम्भ अम्बिका मुकुन्दलाल, देवन की पुरी फेरि नूतन बसायऊ ॥ २२८ ॥

दोहा ।

करत प्रार्थना विबुध गन, प्रणवत बारहि बार ।
जै आद्या सर्वेश्वरी, पैज चरित्र अपार ॥२२६॥

घनाक्षरी ।

प्रथमहिं आदि सृष्टि कमलासनै विलोकि, मधुकैटभासुर अहार जान धायऊ । बिनती विधाता जोग निद्रा महामाया सुनि प्रगटि प्रतोषि आशु केशव जगायऊ ॥ वर्ष पञ्च सहस प्रयन्त भयो घोर जुद्ध, तब भद्रकाली मोहि दुष्टन भ्रमायऊ । बाचाबन्ध करि हरि तिनहीं निपात्यो रन, या विधि मुकुन्द मातु विधिंन बचायऊ ॥

सरसीछन्द ।

अतिसय तेज त्रिशूल विलक्षन तिक्षन कठिन कराल ।
ज्वाला करि कै महाभयंकर खरतर उग्र विशाल ॥
प्रबल बेग दानवदलसूदन त्रासक सकल अनर्थ ।
रक्षा करै सदा विबुधन की सो सब भांति समर्थ ॥२३१॥

सोरठा ।

निर्मल पानि कृपान, असुर मास श्रोनित भरी ।
करहु सदा कल्यान, हम सब कर हे चण्डिके ॥

घनाक्षरी ।

देवन सुबानी सुनि भक्ति पहिचानी भली, बोली महारानी अनुकूलता जनाय कै । सुरपति जलपति आदि अलकाधिपति, निज निज काज कीजिये स्वतन्त्र जाय कै ॥ शुम्भ जाको जौन

वस्तु आन्यो बरजोरी करि, सो सो जांचि लीजिये भलो सुदाव पाय कै । मागिये जो और मन भावई मुकुन्दलाल, देहुँ बरदान सरबस अघवाय कै ॥ २३३ ॥

सवैया ।

कर जोरि बहोरि सराहत देवन, मातु मुकुन्द सबै दुख टारी ।
परिपूरित आश तऊ बर मांगत, देखि प्रसन्न सनेह बिचारी ॥
जबहीं श्रुति धर्म विरोधी बढ़ैं, तबहीं प्रगटे यह ज्योति तुम्हारी ।
हानि दुष्टन मेटहु ताप निरन्तर, हे जननी जन मङ्गलकारी ॥२३४॥
जे नर नेम लिये पद पूजहिं प्रेम किये मन ध्यान लगावैं ।
नाम भवानी जपैं निसिवासर सादर दास अनन्य कहावैं ॥
श्रौन करैं जस राउर उज्जल पैज महात्म्य कथा गुन गावैं ।
आठहु सिद्धि बसे तिनके घर लालमुकुन्द मनोरथ पावैं ॥२३५॥

दोहा ।

विहँसि चण्डिका पुलकितन, बोली धीर धराय ।
रहहु सुरन निर्भय सदा, करब भविष्य सहाय ॥

घनाक्षरी ।

ह्वैहैं विप्रचित्ती के सन्तान दानव प्रधान, धारि कै भयंकर सरूप तिन्है खाइ हौं । काल परे शाक उपराजि हौं शाकम्भरी ह्वै, दुर्गम दनुज मारि दुर्गा नाम पाइहौं ॥ राक्षसन भक्षन क- रूंगी धारि भीमाकृति, भ्रमरी ह्वै दुष्ट अरुनासुर नशाइहौं । नन्द- गोप भौन माहि जनमि जसोदा कोखि, सुखदा मुकुन्द विन्धवासिनी कहाइहौं । २३७ ॥

उत्तम पवित्र मो चरित्र की उदार कथा, कहि सुनिहैं जे करि श्रद्धा नर लोगहीं। त्रिविध सन्ताप भवदाप पाप बाधा दुख व्यापिहैं न आधि व्याधि शोक न वियोगहीं॥ शत्रु चोर राजा जल पावक शस्त्रादि भय महामारी ग्रहारिष्ट नाशिहैं कुरोगहीं। पाइहैं कलत्र पुत्र पौत्रादिक नाना सुख, इच्छित मुकुन्द धनधान्य रस भोगहीं॥ २३८॥

दोहा।

सत्यवादिनी चण्डिका, बहु विधि दै बरदान।
सबके देखत सिंहजुत, भई सु अन्तर्धान॥

सोरठा।

देवनहूँ सुख पाय, जथाजोग्य धन बाँटि सब।
चले व्यवान उड़ाय, स्वबस बसे निज निजपुरी॥

घनाक्षरी।

अगम अगाधि चरिताब्धि मातु चण्डिका को, सहस्रास्य शेष कहि पार नहिं पावहीं। मेधा रिषि व्यास मारकण्डे मुनि नारदादि वरनि अनेक भांति पैज कथा गावहीं॥ अजा निराकार अनवद्यनी अतीता परा भाषि नेति नेति निगमागम बतावहीं। छमि हैं ढिठाई कवि कोविद मुकुन्दलाल, कहां लघुमति कहां चरित प्रभावहीं॥ २४१॥

सोरठा ।

दुर्गापाठ विचारि, कछु मत देवीभागवत ।
काव्यनियमअनुसारि, जहँतहँन्यूनाधिककियो ॥

घनाक्षरी ।

नगर प्रसिद्ध जग विश्वनाथ बाराणसी, जीवन को मुक्ति हेतु महिमा प्रधान है । पञ्चकोश बीच बसै मोहनसराय ग्राम, बारुनी दिशा में एक जोजन प्रमान है ॥ सुकविन दास तहां बसत मुकुन्दलाल, देवीपैज भाषा करि रचना विधान है । सफल मनोरथ सकल सुख प्रदातार, अम्बिकाचरित्र कथा मङ्गल निधान है ॥

दोहा ।

अक्रमादि पुनरुक्ति कटु, व्यर्थ शब्द जतिहीन ।
दुर्गा चरित बिचारि मन, दोष न धरहिं प्रवीन ॥
सम्बत* दृग रस नन्द विधु, पिङ्गल नाम उदार ।
माधवमास बसन्तरितु, अछयत्रितिय रविबार ॥
पूरन देवीपैज करि, जसि कछु बुद्धि विलास ।
श्रीचण्डिकाप्रसाद ते, पूजहिं जन मन आस ॥
पढ़त सुनत देवीकथा, सुमिरत नाम सप्रेम ।
कठिनकष्टकाटिमिलहिंसुख, रनबनमङ्गलछेम ॥

इति श्रीदेवीपैज मुकुन्दीलालरचित द्वितीयभाग सम्पूर्णम् ।

*सम्बत् १९६२